दीपावली उपाय संहिता





फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

विषय सूची

गणपति वंदना



वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदरगजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणाम्यहम्।।

वन्दहुँ विनायक, विधि–विधायक, ऋद्धि–सिद्धि प्रदायकम्।
गजकर्ण, लम्बोदर, गजानन, वक्रतुण्ड, सुनायकम्।।
श्री एकदन्त, विकट, उमासुत, भालचन्द्र भजामिहम।
विघ्नेश, सुख–लाभेश, गणपति, श्री गणेश नमामिहम।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्हिताय्।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

दीपावली पूजन विधि एवं मुहूर्त्त

11.11.2015, बुधवार, नई दिल्ली

पूजा मुहूर्त्त काल दिल्लीः

घर (वृषभ लग्न)– 17:44 से 19:39 तक
साधना सिद्धि समय (सिंह लग्न)– 24:18 से 26:35 तक
व्यावसायिक स्थल (कुम्भ लग्न)– 13:16 से 14:44 तक

चौघड़िया मुहूर्त्त काल दिल्लीः

लाभ– 06:44 से 08:03 तक
अमृत– 08:03 से 09:23 तक
शुभ– 10:44 से 12:05 तक
लाभ– 16:04 से 17:28 तक
अमृत– 20:47 से 22:26 तक
शुभ– 19:05 से 20:47 तक

भारतीय संस्कृति में अनेक पर्व व त्यौहार मनाए जाते हैं। इनमें कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली का पर्व विशेष रूप से मनाया जाता है। यह पर्व असत्य पर सत्य की और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। इस दिन भगवान राम चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे, कृष्ण भक्तों के अनुसार दुष्ट राजा नरकासुर का वध भगवान कृष्ण ने इसी दिन किया था, जैन धर्म के अवलंबी भगवान महावीर का निर्वाण दिवस व आर्य समाजी स्वामी दयानंद की पुण्य तिथि इसी दिन मनाते हैं।

दीपावली खुशियों का त्यौहार है। इस दिन हिंदू परिवारों में भगवान गणेश व लक्ष्मी के पूजन का विशेष महत्व है। इस दिन गणेश जी की पूजा से ऋद्धि–सिद्धि की व लक्ष्मी जी के पूजन से धन, वैभव, सुख, संपत्ति की प्राप्ति होती है। दीपावली को कालरात्रि भी कहा जाता है क्योंकि तंत्र–मंत्र व यंत्रों की सिद्धि के लिए यह रात्रि अत्यधिक उपयोगी मानी जाती है।

दीपावली संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है ''दीपकों की पंक्ति''। प्रत्येक व्यापारी दुकान या घर पर लक्ष्मी का पूजन करता है, वहीं दूसरी ओर गृहस्थ सायं प्रदोष काल में महालक्ष्मी का आवाहन करते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि जहां गृहस्थ और व्यापारीगण धन की देवी लक्ष्मी से सुख–समृद्धि की कामना करते हैं, वहीं तांत्रिक कुछ विशेष सिद्धियां अर्जित करते हैं।

पूजन सामग्रीः कमल व गुलाब के फूल, पान का पत्ता, केसर, रोली, चावल, सुपारी, फल, फूल, दूध, खील, बताशे, सिंदूर, मेवे, शहद, मिठाइयां, दही, गंगाजल, धूप, अगरबत्तियां, दीपक, रुई, कलावा, नारियल और तांबे का कलश।

पूजन विधिः चौकी पर नवग्रह यंत्र बनाएं। इसके साथ ही तांबे के कलश में गंगाजल, दूध, दही, शहद, सुपारी, सिक्के और लौंग आदि डालकर उसे लाल कपड़े से ढंककर एक कच्चा नारियल कलावे से बांधकर रख दें। जहां नवग्रह यंत्र बनाया है वहां चांदी का सिक्का और मिट्टी के बने लक्ष्मी गणेश को स्थापित कर दूध, दही, और गंगाजल से स्नान कराकर अक्षत चंदन का श्रृंगार करके फल–फूल आदि अर्पित करें और दाहिनी ओर घी का एक दीपक जलाएं।

तत्पश्चात् पवित्र आसन पर बैठकर स्वस्ति वाचन करें। गणेश जी का स्मरण कर अपने दाहिने हाथ में गंध, अक्षत, पुष्प, दूर्वा, द्रव्य और जल आदि लेकर गणेश, महालक्ष्मी, कुबेर आदि देवी–देवताओं के पूजन का संकल्प करें।

सर्वप्रथम गणेश और लक्ष्मी का पूजन करें और फिर षोडशमातृका पूजन व नवग्रह पूजन करके महालक्ष्मी आदि देवी–देवताओं का पूजन करें।

दीपक पूजनः दीपक ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक है। इसे भगवान का

तेजस्वी रूप मान कर इसकी पूजा करनी चाहिए। पूजा करते समय अंतःकरण में सद्ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न हो रहा है ऐसी भावना रखनी चाहिए।

दीपावली के दिन पारिवारिक परंपरा के अनुसार ग्यारह, इक्कीस अथवा इनसे अधिक तिल के तेल के दीपक प्रज्ज्वलित करके एक थाली में रखकर पूजन करें।

इसके बाद महिलाएं अपने हाथ से संपूर्ण सुहाग सामग्री लक्ष्मी को अर्पित करें। अगले दिन स्नान के बाद पूजा करके उस सामग्री को मां लक्ष्मी का प्रसाद मानकर स्वयं प्रयोग करें, इससे मां लक्ष्मी की कृपा सदा बनी रहती है।

कार्यक्षेत्र में सफलता व आर्थिक स्थिति में उन्नति के लिए सिंह लग्न अथवा अन्य स्थिर लग्नों में श्रीसूक्त का पाठ करें। उस समय आसन पर बैठकर लक्ष्मी जी की तस्वीर के सामने शुद्ध घी का दीपक जलाएं व श्रीसूक्त का पाठ करें। इसके बाद हवन कुंड में श्रीसूक्त की प्रत्येक ऋचा के साथ आहुति दें।

दीपावली पूजन के समय गणेश–लक्ष्मी के साथ विष्णु जी की स्थापना अनिवार्य है। लक्ष्मी जी के दाहिनी ओर विष्णु जी और बाईं ओर गणेश जी को रखना चाहिए।

समुद्र से उत्पन्न दक्षिणावर्ती शंख, मोती, शंख, गोमती चक्र आदि लक्ष्मी के सहोदर भाई हैं। इनकी स्थापना करने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर घर आती हैं।

इस प्रकार दीपावली के अवसर पर श्रद्धा, निष्ठा और विधि–विधानपूर्वक पूजन करने पर लक्ष्मी जी की कृपा सदैव बनी रहती है।

मुख्य स्थानों में दीपावली पूजन का समय 11.11.2015						
शहर	व्यावसायिक स्थल में पूजन का समय		घर में पूजन का समय		साधना व सिद्धि समय	
	कुम्भ लग्न		वृषभ लग्न		सिंह लग्न	
	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त	प्रारम्भ	समाप्त
दिल्ली	13:16	14:44	17:44	19:39	24:18	26:35
चेन्नई	12:47	14:28	17:56	19:58	24:23	26:26
कोलकाता	12:25	13:58	17:10	19:08	23:37	25:52
मुंबई	13:23	14:59	18:17	20:17	24:47	26:55
लखनऊ	12:59	14:29	17:32	19:29	24:06	26:21
पटना	12:41	14:11	17:17	19:14	23:46	26:04
भोपाल	13:09	14:42	17:52	19:50	24:24	26:36
देहरादून	13:15	14:41	17:37	19:32	24:13	26:32
अहमदाबाद	13:28	15:01	18:11	20:10	24:43	26:55
बैंगलूरू	12:57	14:39	18:07	20:09	24:34	26:37
रांची	12:38	14:10	17:20	19:18	23:48	26:04
गुवाहटी	12:15	13:45	16:50	18:47	23:19	25:38
रायपुर	12:50	14:24	17:38	19:37	24:09	26:19
जयपुर	13:20	14:49	17:53	19:49	24:26	26:41
जम्मू	13:31	14:54	17:46	19:39	24:22	26:44
काठमांडू	12:58	14:27	17:30	19:26	24:04	26:19

फ्यूचर पॉइंट की ओर से आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

उपाय क्यों करें ?

संसार में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी ग्रह की पीड़ा से दुःखी है। हर व्यक्ति धन–धान्य संपन्न भी नहीं है। यदि अशुभ ग्रहों के प्रभावस्वरूप बार–बार प्रयत्न करने पर भी जीवन में विघ्नों एवं विफलताओं का सामना करना पड़े और भाग्य साथ न देता हो तो अशुभ ग्रहों की अनुकूलता हेतु उपाय करने से अनुकूल फल मिलने आरम्भ हो जाते हैं। अरिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में अनेक प्रकार के उपाय बताए गये हैं। व्यक्ति का स्वभाव है कि वह सदैव सुखी रहना चाहता है परंतु विधि के विधान के अनुसार धरती पर ईश्वर भी जन्म लेकर जब आया है तो उसे भी ग्रहों की चाल के अनुसार सुःख–दुःख सहना पड़ा। हम अपने जीवन में आने वाले दुःखों को कम करने अथवा उनसे बचने हेतु उपाय करना चाहते हैं और उपायों का विधि–विधान एवं श्रद्धा से पालन करने से दुःखों का अंत तो नहीं होता परन्तु उनमें कमी निश्चित रूप से होती है। साथ ही जातक में दुःख सहने की शक्ति आ जाती है।

उपाय क्या करें :

मनुष्य के जीवन में जितना महत्व उसके शरीर का है, उतना ही महत्व सूर्य, चंद्र आदि ग्रहों अथवा आस–पास के वातावरण का भी है। यह सर्वसत्य है कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में कोई ग्रह दोष होता है तो वह धन संबंधी मामलों में भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। ग्रह दोषों के कारण ही उसे सुख नहीं मिलता। यदि उचित ज्योतिषीय उपचार किया जाए तो व्यक्ति पैसों की परेशानी से छुटकारा पा सकता है। यदि आपके जीवन में धन की कमी है, कर्ज मुक्ति चाहते हैं, व्यापार चाहते हुए भी नहीं बढ़ पा रहा है, शत्रु परेशान कर रहे हैं, स्वास्थ्य की कमी उन्नति में बाधक बन रही है, आरोग्य का अभाव है, संतानहीनता आपके जीवन के सुखों को ग्रसित कर रही है, यदि संतान है भी तो सुख–सहयोग नहीं देती है, नौजवान अपने विवाह और माता–पिता अपनी

कन्या अथवा पुत्र के विवाह को लेकर चिंतित रहते हैं, विवाह के बाद वैवाहिक जीवन की सुख–शान्ति को लेकर परेशानियां बनी रहती है, किसी व्यक्ति की कुंडली में कालसर्प दोष है इसलिए वह जीवन में आगे बढ़ने में सफल नहीं हो पा रहा है और कोई व्यक्ति शनि कष्टों के कारण मानसिक अशान्ति की स्थिति से गुजर रहा है। व्यक्ति को जीवन में एक ही समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है अपितु जीवन समस्याओं का अथाह सागर है, इसलिए किसी ने सच ही कहा है 'दुखिया नानक सब संसार'। किसी व्यक्ति के पास सब कुछ है पर कोर्ट कचहरी, शिक्षा में बाधा, नौकरी में स्थायित्व की कमी या मनोकूल स्थानान्तरण नहीं हो पा रहा है। कुछ इसी प्रकार की समस्याओं का सामना आपको करना पड़ रहा है तो उन सभी पाठकों के लिए यह दीपावली उपाय संहिता 'रामबाण' का कार्य कर सकती है। इस पुस्तिका में दिये गये उपाय सरल, सहज, सटीक और अचूक हैं। इन्हें अपनाकर आप अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं।

उपाय करने के साधारण नियमः

• उपाय सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य ही करें।

• पीड़ित जातक के स्थान पर खून का रिश्ता रखने वाले भाई–बहन, माता–पिता, दादा–दादी इत्यादि भी उपाय कर सकते हैं।

• मांस–मछली एवं मदिरा का सेवन न करें। चाल–चलन ठीक रखें व झूठ न बोलें।

• जूठन न खायें न खिलायें, नीयत में खोट न रखें। परस्त्री–परपुरुष से संबंध न रखें।

• उपाय करते समय नियमों का पूर्ण रूप से पालन करें।

• घर में बच्चे का जन्म हो या किसी की मृत्यु हो जाए तो उस अवधि में उपाय नहीं करने चाहिए।

ग्रहों की शांति के कुछ उपाय

सूर्य

- पिता का सम्मान करें। विष्णु पूजा करें।
- गेहूँ, गुड़ और तांबे का दान करें।
- अपना चरित्र उत्तम रखें।
- तांबे का सिक्का बहते हुए पानी में बहाएं।
- एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- सूर्य यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- रिश्वत खोरी न करें।
- **ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** मंत्र का जाप करें।

चन्द्रमा

- माता का सम्मान करें। शिव आराधना करें।
- चांदी, चावल और दूध का दान करें।
- गंगा स्नान करें।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- चंद्र यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः** मंत्र का जाप करें।

मंगल

- भाई की सेवा करें। हनुमान जी की पूजा करें।
- मसूर की दाल बहते हुए पानी में बहाएं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करें
- मंगल यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः** मंत्र का जाप करें।

बुध

- बहन, बुआ, मौसी से आशीर्वाद प्राप्त करें।
- सुराख वाला तांबे का पैसा बहते पानी में बहाएं।
- मां दुर्गा की पूजा करें।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- बुध यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः** मंत्र का जाप करें।

बृहस्पति

- गुरु और ब्राह्मणों की पूजा करें।
- धार्मिक पुस्तकें दान करें।
- बड़ों को सम्मान दें।
- पांच मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- बृहस्पति यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे** नमः मंत्र का जाप करें।

शुक्र

- स्त्री का सम्मान करें।
- लक्ष्मी की उपासना करें।
- गोदान करें।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शुक्र यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** मंत्र का जाप करें।

शनि

- मीट और शराब का सेवन न करें।
- नौकरों को प्रसन्न रखें।
- भैरो की उपासना करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनि यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः** मंत्र का जाप करें।

राहु

- सरस्वती पूजन करें।
- बिजली का सामान घर में ठीक से रखें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- राहु यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मंत्र का जाप करें।।

केतु

- गणेश जी की पूजा करें।
- काला–सफेद कुत्ता घर में पालें।
- नौ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- केतु यंत्र स्थापित कर इनकी नियमित पूजा करें।
- **ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** मंत्र का जाप करें।

सर्वोपयोगी मंत्र

नवग्रह मंत्र

सूर्य	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ घृणि सूर्याय नमः
चंद्र	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ सों सोमाय नमः
मंगल	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ अं अंगारकाय नमः
बुध	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ बुं बुधाय नमः
गुरु	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ बृं बृहस्पतये नमः
शुक्र	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ शुं शुक्राय नमः
शनि	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ शं शनैश्चराय नमः
राहु	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ रां राहुवे नमः
केतु	:	तांत्रिक मंत्र	–	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः
		लघु मंत्र	–	ऊँ कें केतवे नमः

स्वास्थ्य प्राप्ति उपाय

यंत्र : बृहस्पति यंत्र, सूर्य यंत्र एवं महामृत्युंजय यंत्र विधिवत् स्थापित कर पूजन करें।

मंत्र : रोग नाश के लिए– **ऊँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम, उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात** मंत्र का नित्य जाप करें।

दुर्गा मंत्र : **ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः** मंत्र का एक माला जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।

रत्न : माणिक्य रत्न धारण करें या लग्नेश का रत्न धारण करें।

रुद्राक्ष : एक मुखी रुद्राक्ष एवं पांच मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : रविवार का व्रत, निर्जला एकादशी एवं धनतेरस व्रत का पालन करें।

दान : निरोगी शरीर पाने के लिए अन्न और जल का दान करें।

दर्शन : पारद शिवलिंग का दर्शन, पूजन करें।

विसर्जन : प्रत्येक रविवार गुड़ और चावल को नदी अथवा बहते पानी में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : 'अथ सूर्यकवचम्' का पाठ दीर्घायु प्रदान करता है।

टोटके : • अशोक के पेड़ की तीन ताजा पत्तियों को चबाने से चिंताओं से मुक्ति मिलती है और स्वास्थ्य भी उत्तम बना रहता है।

• बीमार व्यक्ति के तकिये के नीचे सहदेई और पीपल की जड़ रखने से बीमारी जल्द ठीक हो जाती है।

• यदि किसी व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो रहा हो, तो जौ के आटे में काले तिल और सरसों का तेल मिलाकर रोगी के ऊपर से सात बार उतार कर किसी भैंसे को खिलाएं, शीघ्र लाभ मिलेगा।

विशेष : हवन, यज्ञ : महामृत्युंजय मंत्र जाप हवन/यज्ञ कराएं।

आरोग्यता उपाय

यंत्र : सूर्य यंत्र एवं धन्वन्तरी यंत्र का पूजन दर्शन करें।

मंत्र : देव धन्वन्तरी मंत्र : **ऊं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं धन्वन्तरि सर्व रोग नाशय आरोग्यम देहि देहि ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं नमः** मंत्र, सूर्य मंत्र : **ऊं घृणिः सूर्याय नमः** मंत्र का जाप 108 बार 5 मुखी माला से करें।

रत्न : अभिमंत्रित 'माणिक्य रत्न' रविवार को शुभ मुहूर्त में धारण करें।

रुद्राक्ष : एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : सूर्य सप्तमी तिथि व्रत, रविवार का व्रत, धनतेरस के व्रत पालन करें।

दान : किसी चिकित्सा केन्द्र पर जाकर मरीजों को औषधि का दान करें।

दर्शन : सूर्य देव तथा देव धन्वन्तरी के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : पीपल के पांच पत्ते लेकर उन्हें पीले चंदन में रंगकर बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : आदित्य हृदय स्तोत्रम् का पाठ करें।

टोटके : • धनतेरस के दिन दीपदान करने से अकाल मृत्यु के योग का नाश होता है।

• रविवार को प्रातःकाल में सूर्योदय के समय सूर्य को जल अर्पित करें एवं प्रतिदिन पिता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

• धनतेरस पर संध्याकाल में घर के मुख्य द्वार पर तेल का दीपक जलाएं तथा उस दीपक में दो काली गुंजा डाल दें तो वर्ष भर आपको शारीरिक रूप से परेशानी नहीं होगी।

• प्रत्येक मंगलवार को बच्चे के सिर पर से कच्चा दूध 11 बार वार कर किसी कुत्ते को सायं काल में पिला दें। बच्चा दीर्घायु होगा।

विशेष : हवन, यज्ञ : सूर्य देवता का हवन, गो घृत, मदार या आक की लकड़ी से करें।

धन प्राप्ति उपाय

यंत्र : श्री यंत्र, महालक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र एवं सम्पूर्ण महालक्ष्मी यंत्र का नित्य दर्शन–पूजन करें।

मंत्र : महालक्ष्मी मंत्र : **ॐ श्रीं महालक्ष्म्यै नमः** का स्फटिक माला पर 1 से 5 माला नित्य जाप करें।

रत्न/कवच : उन्नतिकारक व स्वास्थ्यदायक कवच (माणिक्य, मोती, मूंगा एवं एक मुखी रुद्राक्ष) धारण करें।

रुद्राक्ष : ग्यारह मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : मां वैभव लक्ष्मी व्रत, षट्तिला एकादशी (माघ कृष्ण एकादशी) एवं दीपावली व्रत ऋद्धि–सिद्धि एवं धन प्रदान करने वाले व्रत हैं।

दान : रजत एवं चावल इत्यादि सफेद वस्तुओं का दान करें।

दर्शन : श्री कुबेर व सम्पूर्ण महालक्ष्मी जी के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : जटा वाला नारियल नए लाल वस्त्र में बांधकर 11 शुक्रवार बहते जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : श्री लक्ष्मी स्तोत्रम एवं कनकधारा स्तोत्रम का नित्य पाठ करें।

टोटके : • अपने परिवार में धन वृद्धि बढ़ाने के लिए दीपावली की अमावस्या पर कोई किन्नर मिल जाए तो उसकी सहमति से उससे एक रुपये का सिक्का लेकर अपने पास सदैव के लिए रख लें।

• धन का संचय बढ़ाने के लिए तिजोरी में लाल कपड़ा बिछाकर रखें।

• दीपावली की रात्रि में आप पांच जोड़ी गोमती चक्र लाकर उन्हें एक लाल वस्त्र में बांध पर मुख्य द्वार की चौखट पर बांध दें। इससे आपके घर में धन बना रहेगा।

विशेष : हवन, यज्ञ : श्रीकनकधारा हवन/यज्ञ, श्री लक्ष्मी सहस्रनाम मंत्र जाप, हवन/यज्ञ कराएं।

कर्ज मुक्ति उपाय

यंत्र : श्री ऋण मुक्ति बीसा यंत्र एवं स्फटिक श्री यंत्र की नित्य उपासना।

मंत्र : ऊँ गं ऋणहर्तायै नमः, ऊँ मंगलमूर्तये नमः या **ऊँ ऋण–मुक्तेश्वर महादेवाय नमः** का हकीक माला पर नित्य 1 माला जाप करें।

रत्न : हकीक रत्न धारण करें।

रुद्राक्ष : तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करें

व्रत : भौम प्रदोष व्रत का पालन करें।

दान : बुधवार को लाल मसूर की दाल का दान करें।

दर्शन : बंशी बजाते हुए भगवान श्रीकृष्ण के चित्र का नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : पांच गुलाब के फूल, एक चांदी का पत्ता, थोड़े चावल, गुड़ लेकर किसी सफेद कपड़े में 21 बार गायत्री मंत्र का जाप करते हुए बांधकर जल में प्रवाहित कर दें। ऐसा 7 सोमवार करें।

स्तोत्र : गणेश स्तोत्र, हनुमान चालीसा या बजरंगबाण का नित्य पाठ करें।

टोटके : • बुधवार को स्नान और पूजा के बाद गाय को हरा चारा खिलाएं और उसके बाद ही स्वयं कुछ ग्रहण करें।

• बुधवार को सवा पाव मूंग उबालकर घी एवं शक्कर मिलाकर गाय को खिलाएं।

• कर्ज से मुक्ति प्राप्त करने के लिए लाल वस्त्र पहनें या लाल रूमाल साथ रखें तथा भोजन में गुड़ का प्रयोग करें।

• महालक्ष्मी की पूजा के साथ 21 हकीक पत्थरों की भी पूजा करें फिर उन्हें अपने घर में कहीं भी जमीन में गाड़ दें और ईश्वर से कर्ज मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

विशेष : हवन यज्ञ : गणपति पूजा, हवन/यज्ञ कराएं।

व्यापार वृद्धि उपाय

यंत्र : सम्पूर्ण व्यापार वृद्धि यंत्र, महालक्ष्मी चौकी, दुर्गा बीसा यंत्र एवं श्री यंत्र का नित्य पूजन करें

मंत्र : कमला मंत्र : **ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं हसौः जगत्प्रसूत्यै नमः** मंत्र का नित्य 5 माला जाप करें। जाप के लिए कमलगट्टे की माला का प्रयोग करें।

रत्न/लॉकेट : लक्ष्मी गणेश लॉकेट, पन्ना रत्न, पन्ना रत्न का लॉकेट।

रुद्राक्ष : चार मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : बुधवार का व्रत करें।

दान : शनिवार को पीपल का एक पत्ता तोड़कर लाएं, उसे धूप दिखाकर अपने व्यापार स्थल की गद्दी के नीचे रख दें। 7 शनिवार ऐसा करें। इसके बाद इन्हें एक साथ किसी तालाब या कुएं में बहा दें।

दर्शन : श्वेतार्क गणपति को व्यापार केन्द्र में स्थापित कर नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : अपने वजन की मात्रा का कोयला बुधवार को जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : संकटनाशन गणेश स्तोत्र का पाठ 11 बार करें।

टोटके : • शुक्ल पक्ष में किसी भी दिन अपने व्यापार केन्द्र के दरवाजे के दोनों तरफ बाहर की ओर थोड़ा सा गेहूँ का आटा रख दें। ध्यान रहे ऐसा करते हुए आपको कोई देखे नहीं।

• किसी बर्तन में सफेद सरसों इस प्रकार रख दें कि वह दिखाई देती रहे और बर्तन कार्यस्थल में ऐसी जगह रख दें जहां आने–जाने वालों का ध्यान उस पर पड़े।

विशेष : हवन, यज्ञ : श्री गणपति पूजा/हवन/यज्ञ या श्री महालक्ष्मी पूजा/हवन/यज्ञ कराएं।

शिक्षा बाधा निवारण उपाय

यंत्र : संपूर्ण विद्याप्रदायक यंत्र, बृहस्पति यंत्र एवं सरस्वती यंत्र का दर्शन पूजन करें।

मंत्र : सरस्वती मंत्र : **ऊँ सरस्वत्यै ऊँ नमः** मंत्र का जाप 108 बार स्फटिक माला पर करें।

रत्न : बुध रत्न एवं गुरु रत्न धारण करने से ज्ञान प्राप्ति सहज होती है।

रुद्राक्ष : चार मुखी रुद्राक्ष, गणेश रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : बुधवार व्रत का पालन करने अथवा चतुर्थी व्रत का पालन करने से बौद्धिक योग्यता का विकास होता है।

दान : चीनी, केला, पीला वस्त्र, केशर, नमक, मिठाइयां, हल्दी, पीले फूल का दान करें।

दर्शन : देवी सरस्वती एवं श्री गणेश के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए बुधवार के दिन तांबे का पत्र बहते जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

टोटके : • चांदी का चौकोर टुकड़ा हमेशा अपने पास रखें।

• बुधवार को लाल कपड़े की थैली में सौंफ भरकर तकिए के नीचे रखें।

• रविवार को तांबे का सिक्का सफेद या लाल धागे में गले में धारण करें।

• अच्छे सकारात्मक परिणाम के लिए सूर्यास्त के बाद रात्रि में दूध न लें।

• दिन में दूध–दही, पनीर ले सकते हैं। दही व पनीर रात्रि को भी ले सकते हैं, परंतु दूध नहीं।

• धार्मिक स्थल पर शैक्षिक वस्तुओं का दान करें।

विशेष : हवन, यज्ञ – मां सरस्वती की पूजा, मंत्र जाप व हवन/यज्ञ करें।

विवाह बाधा निवारण उपाय

यंत्र : मातंगी यंत्र, विवाह योग्य वर शुक्र यंत्र व कन्या गुरु यंत्र का दर्शन पूजन करें।

मंत्र : शीघ्र विवाह के लिए भगवान श्री कृष्ण मंत्र **"क्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा"** का १०८ बार नित्य जाप करें।

रत्न : हीरा रत्न धारण करें।

रुद्राक्ष : ६ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : गुरुवार का व्रत, विवाह योग्य कन्या सोमवार एवं मंगलागौरी व्रत का पालन करें।

दान : शीघ्र विवाह के लिए सोमवार को 1200 ग्राम चने की दाल व सवा लीटर कच्चे दूध का दान करें। यह प्रयोग तब तक करते रहना है जब तक कि विवाह न हो जाये।

दर्शन : भगवान शिव पार्वती के नित्य दर्शन करें। पारद शिवलिंग के दर्शन करें।

विसर्जन : विवाह योग्य व्यक्ति शुक्रवार की रात्रि में आठ छुआरे जल में उबाल कर जल के साथ ही अपने सोने वाले स्थान पर सिरहाने रख कर सोयें तथा शनिवार को प्रातः स्नान करने के बाद किसी भी बहते जल में इन्हें प्रवाहित कर दें।

स्तोत्र : श्री राम स्तोत्र का पाठ करें।

टोटके : • पूर्णिमा को वट वृक्ष की 108 परिक्रमा देने से भी विवाह बाधाएं दूर होती हैं।

• गुरूवार को वट, पीपल एवं केले के वृक्ष पर जल अर्पित करने से विवाह बाधाएं दूर होती हैं।

विशेष : हवन, यज्ञ : कात्यायनी देवी का मंत्र जाप व हवन कराएं।

वैवाहिक सुख प्राप्ति उपाय

यंत्र : प्रेम वृद्धि यंत्र एवं आकर्षण यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : सौभाग्य प्राप्ति के लिए– **ऊँ गौरी शंकराय नमः** मन्त्र का जाप रुद्राक्ष माला पर करें।

रत्न : पुखराज रत्न धारण करने से वैवाहिक जीवन की बाधायें दूर होती हैं।

रुद्राक्ष : गौरी शंकर रुद्राक्ष अथवा दो मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : वट सावित्री व्रत, करवा चौथ व्रत एवं प्रदोष व्रत का पालन करना चाहिए।

दान : विवाहित स्त्री दान करते समय दान सामग्री में लाल सिंदूर के साथ इत्र की शीशी, चने की दाल तथा केसर अवश्य रखें।

दर्शन : पारद शिवलिंग का दर्शन पूजन करें।

विसर्जन : शनिवार के दिन, जिस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग' हो तो सायंकाल में अपनी लम्बाई के बराबर लाल रेशमी सूत नाप लें, फिर एक पत्ता बरगद का तोड़ें, उसे स्वच्छ जल से धोकर पोंछ लें तथा पत्ते पर अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय रखने की कामना करते हुए लाल रेशमी सूत लपेट दें और पत्ते को बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें।

स्तोत्र : संकटनाशन गणेश स्तोत्र एवं मंगलदोष दूर करने के लिए मंगलकवचम् का पाठ करें।

टोटके : • प्रतिदिन प्रातः केले और पीपल के पेड़ का पूजन करें।

• अपनी पत्नी का सम्मान सदैव 'लक्ष्मी' की भाँति करें।

विशेष : हवन, यज्ञ : वैधव्य दोष यदि बन रहा हो तो वैधव्य दोष निवारण हवन अनुष्ठान करना चाहिए। मंगल दोष होने पर महामंगल अनुष्ठान करायें।

मंगल दोष शांति उपाय

यंत्र : मंगल यंत्र, मंगल दोष निवारण यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : ऊँ भौ भौमाय नमः मंत्र का जाप करें।

रत्न : मंगलवार के दिन मूंगा रत्न धारण करें।

रुद्राक्ष : तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : मंगलवार व्रत का पालन करें।

दान : गुड़, लाल फूल, गेहूं, लाल दाल का दान करने से मंगल की शुभता में वृद्धि होती है।

दर्शन : हनुमान जी का नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : मंगलवार को रेवड़ियां पानी में विसर्जित करें।

स्तोत्र : हनुमान चालीसा का पाठ करें।

टोटके : • पति–पत्नी दोनों एक साथ रसोई में बैठकर भोजन करें।

• स्नान के बाद सूखे वस्त्र को हाथ लगाने से पहले पूर्व दिशा में मुँह करके सूर्य को अर्घ्य देकर प्रणाम करें। (सूर्य देव दिखाई दें या न दें)

• शयन कक्ष में पलंग पर काँच लगे हों तो उन्हें हटा दें, मंगल का कोप नहीं रहेगा अन्यथा उस काँच में पति–पत्नी का जो भी अंग दिखाई देगा वह रोगग्रस्त हो जायेगा।

• मीठी रोटियों का दान करें।

• ताँबे के तार में डाले गये रूद्राक्ष की माला धारण करें।

• मंगलवार को शिवलिंग पर जल चढ़ायें।

• मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बाल काण्ड का पाठ करें।

• बन्दरों व कुत्तों को गुड़ व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं

विशेष : हवन, यज्ञ : मंगल दोष शान्ति हवन करायें।

सन्तान प्राप्ति उपाय

यंत्र : संतान गोपाल यंत्र एवं बृहस्पति यंत्र का नित्य पूजन करें।

मंत्र : देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः मंत्र का जाप नित्य पुत्र प्राप्ति माला पर 108 बार करें।

रत्न : शुक्र मुक्ता धारण करें।

रुद्राक्ष : पांच मुखी रुद्राक्ष बृहस्पतिवार को प्रातः काल में धारण करें।

व्रत : पुत्रदा एकादशी व्रत का पालन करें।

दान : पीली वस्तुओं का दान करें तथा पीले खाद्य पदार्थों का भोजन करें। गौ दान करने से भी संतान प्राप्ति में सहयोग प्राप्त होता है।

दर्शन : लड्डू गोपाल के बाल रूप के चित्र का नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : सोमवार को श्वेत वस्त्र में चावल–मिश्री बांध कर बहते जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : संतान गोपाल स्तोत्र अथवा विष्णु सहस्रनाम का जाप करें।

टोटके : • किसी भी गुरुवार को पीले धागे में पीली कौड़ी कमर से बांधने से संतान प्राप्ति के योग प्रबल होते है।

• संतान प्राप्ति के लिए स्त्री पारद शिवलिंग पर नियमित रूप से दूधाभिषेक करें।

• शुक्ल पक्ष में बरगद के पत्ते को धोकर साफ करके उस पर कुमकुम से स्वास्तिक बनाकर उस पर थोड़े से चावल और एक सुपारी रखकर सूर्यास्त से पहले किसी मंदिर में अर्पित कर दें और प्रभु से संतान प्राप्ति हेतु प्रार्थना करें।

विशेष : हवन, यज्ञ : संतान गोपाल मंत्र का १००० संख्या जाप प्रतिदिन, १०० दिनों तक करें। १०००० मंत्रों से हवन करायें। १००० से तर्पण, १०० से मार्जन तथा १० ब्राह्मणों को भोजन करायें।

सन्तान कष्ट निवारण उपाय

यंत्र : बालगोपाल यंत्र एवं बृहस्पति यंत्र का नित्य पूजन करें.

मंत्र : कमलगट्टे या मूंगा माला से **ॐ श्रीं ऐं संतानलक्ष्मी पूर्ण सिद्धिं ऐं श्रीं नमः** मंत्र की २१ माला जाप करें।

रत्न / लॉकेट : मोती–चांद लॉकेट अथवा स्वास्थ्यवर्धक त्रिशक्ति लॉकेट संतान को धारण करायें।

रुद्राक्ष : गौरी गणेश रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : अहोई अष्टमी व्रत, शुक्रवार का व्रत, जीवत्पुत्रिका व्रत का पालन करें।

दान : गरीब बालक–बालिकाओं को पढ़ाएं एवं वस्त्र, कॉपी तथा पुस्तकों का दान करें।

दर्शन : पारद शिव परिवार एवं पारद शिवलिंग के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : सन्तान कुण्डली के षष्ठेश की वस्तुएं बहते जल में प्रवाहित करें।

शनि मन्दिर में 10 बादाम चढ़ाकर उसमें से 5 बादाम घर में लाकर रखें। एक या दो साल बाद उन्हें बहते जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : अथ बृहस्पतिकवचम् का पाठ संतान के स्वास्थ्य को बढ़ाता है।

टोटके : • गाय की सेवा करें।

• एक काला रेशमी डोरा लेकर **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः"** का जाप करते हुए उस डोरे में थोड़ी–थोड़ी दूरी पर सात गांठें लगायें। उस डोरे को बच्चे के गले या कमर में बांध दें।

• प्रत्येक मंगलवार को बच्चे के सिर पर से कच्चा दूध 11 बार वार कर किसी जंगली कुत्ते को शाम के समय पिला दें, बच्चा दीर्घायु होगा।

विशेष : हवन, यज्ञ : संतानलक्ष्मी की साधना करायें।

नौकरी प्राप्ति उपाय

यंत्र : शनि यंत्र (नौकरी) एवं सरकारी नौकरी के लिए सूर्य यंत्र का दर्शन पूजन करें।

मंत्र : शनि देव की पूजा करने के पश्चात **ऊँ शं शनैश्चराय नमः** मंत्र का जाप करें।

रत्न : बाधामुक्ति त्रिशक्ति लॉकेट धारण करें।

रुद्राक्ष : एक मुखी रुद्राक्ष एवं नौ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : सरकारी नौकरी की कामना के लिए रविवार का व्रत और अन्य किसी क्षेत्र में नौकरी पाने के लिए शनिवार के व्रत का पालन करें।

दान : शनिवार के दिन काले कंबलों का दान करें।

दर्शन : बजरंग बली का एक ऐसा चित्र लें जिसमें वे उडने की मुद्रा में हों, ऐसे चित्र के नित्य दर्शन–पूजन करने से लाभ होता है।

विसर्जन : काले तिलों को शनिवार के दिन बहते जल में प्रवाहित करें।

स्तोत्र : हर मंगलवार को बजरंग बाण का पाठ करें एवं हनुमान चालीसा का पाठ करें।

टोटके : • गाय को आटा और गुड़ खिलायें।

• बड़े–बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते रहें।

• सुबह स्नान करते समय पानी में थोड़ी पीसी हल्दी मिलाकर स्नान करें।

• इंटरव्यू देने के लिए निकलने से पहले एक चम्मच दही और चीनी मुंह में रख लें।

• नौकरी न मिल रही हो तो मन्दिर में 12 फल चढ़ाएं। यह उपाय नियमित रूप से करें और ईश्वर से नौकरी मिलने की प्रार्थना करें।

विशेष : हवन, यज्ञ : गायत्री मंत्र का जाप हवन करायें।

नौकरी स्थानान्तरण उपाय

यंत्र : संपूर्ण कार्यसिद्धि यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : ऊँ सूर्याय नमः एवं **ऊँ भास्कराय नमः** मंत्र का १०८ बार नित्य जाप करें।

रत्न : नवग्रह रत्न अंगूठी धारण करें।

रुद्राक्ष : एक मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : सफला एकादशी एवं शनिवार व्रत का पालन करें।

दान : बुधवार के दिन पांच हरी वस्तुओं का दान करें।

दर्शन : सूर्य देव के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : बड़ के पत्ते पर मनोकामना लिखकर बहते जल में प्रवाहित करने से मनोरथ की पूर्ति होती है।

स्तोत्र : स्वस्तिवाचनम् स्तोत्र का पाठ करें।

टोटके : • यदि आप अपना तबादला किसी मनपसन्द स्थान पर करवाना चाहते हैं तो सोते समय अपना सिरहाना दक्षिण की ओर रखें।

• दो ताम्बे के लोटे लें। एक में जल के साथ बेल पत्र व गुड़ तथा दूसरे में 21 लाल मिर्च के दाने डालकर सूर्य देव को अर्पित करें तथा सूर्य देव से प्रार्थना करें।

• कार्य स्थान पर जाने के बाद पैर धोकर अपने स्थान पर बैठना चाहिए एवं पिसी हुई हल्दी बहते जल में प्रवाहित करें।

• सही नौकरी मिलने में दिक्कत आने पर एक ऐसे कुएं में दूध डालें जिसमें पानी हो।

• सूर्योदय के समय तांबे के लोटे में जल लेकर उसमें लाल मिर्च के 21 दाने डालकर नित्य सूर्य को अर्घ्य दें और प्रार्थना करें।

विशेष : हवन, यज्ञ : सूर्य मंत्र जाप, हवन करायें।

शत्रु नाश उपाय

यंत्र : बगलामुखी यंत्र, राम रक्षा यंत्र एवं मंगल यंत्र का दर्शन पूजन करना चाहिए।

मंत्र : बगलामुखी गायत्री मंत्र : **ऊं बगलामुख्यै च विद्महे स्तंभिन्यै च धीमहि, तन्नो देवी प्रचोदयात्** का नित्य जाप करें

रत्न : मंगल रत्न मूंगा, मंगलवार को धारण करें।

रुद्राक्ष : एक मुखी रुद्राक्ष, तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : दुर्गा नवरात्र, गुरु प्रदोष व्रत, मंगलवार व्रत या आमलकी एकादशी व्रत का पालन करें।

दान : गुरुवार के दिन 8 ब्राह्मणों को इच्छानुसार चना दाल दान करें।

दर्शन : देवी बगलामुखी के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन : सवा किलो उड़द एवं सवा किलो कोयला लेकर दोनों को सवा मीटर काले कपड़े में बांध कर अपने ऊपर से 21 बार वारकर शनिवार के दिन बहते जल में प्रवाहित करें। ऐसा लगातार 7 शनिवार करें।

स्तोत्र : बगलामुखी स्तोत्र का पाठ करें।

टोटके : • साबुत उड़द की काली दाल के 38 और चावल के 40 दाने मिलाकर किसी गड्ढे में दबा दें और ऊपर से नींबू निचोड़ दें। नींबू निचोड़ते समय शत्रु का नाम लेते रहें, ऐसा करने से शत्रु का शमन होगा।

• भोजपत्र पर लाल चंदन से शत्रु का नाम शुद्ध शहद में डूबाने से शत्रु के मन में आपके प्रति प्रेम और सहानुभूति के भाव जागृत होंगे।

• सेंधें नमक से देवी बगलामुखी का **'ह्लीं शत्रु नाशय'** मंत्र से हवन करें।

• लाल धागे में 8 नींबू पिरोकर देवी बगलामुखी के चित्र पर माला चढ़ाएं।

विशेष : हवन, यज्ञ : बगलामुखी साधना कराएं।

मुकद्दमे में विजय उपाय

यंत्र : बगलामुखी यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : ऊँ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां, वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय, बुद्धि विनाशय ह्रीं ओम् स्वाहा मंत्र का जाप हल्दी की माला पर करें।

रत्न : मूंगा त्रिकोण आकृति का मंगलवार को धारण करें अथवा बगलामुखी लॉकेट धारण करें।

रुद्राक्ष : 7, 5 एवं 11 मुखी रुद्राक्ष एक साथ धारण करें।

व्रत : मंगलवार का व्रत एवं आमलकी एकादशी व्रत का पालन करें।

दान : रात को मसूर की दाल सिरहाने रखें और सुबह जमादार को दान कर दें।

दर्शन : मां बगलामुखी का नित्य दर्शन पूजन करें।

विसर्जन : जंग लगी चाकू व छुरी जल में प्रवाहित कर दें।

स्तोत्र : हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें।

टोटके : • कोर्ट कचहरी जाते समय 5 गोमती चक्र अपनी जेब में रखकर जायें। निर्णय आपके पक्ष में होगा।

• मुकद्दमे में विजय पाने के लिए आप थोड़े से चावल अपने साथ ले जायें और जिस कमरे में आपका मुकद्दमा चल रहा हो उस कमरे के बाहर ये चावल फेंक दें। ध्यान रखें कि ऐसा करते हुए आपको कोई देखे नहीं।

• जब आप पहली बार मुकद्दमे से वापस आ रहे हैं तो रास्ते में किसी भी मजार पर गुलाब का पुष्प अर्पित करते हुए ही अपने निवास पर आएं।

• दो दुकानों से 43–43 फल लेकर कन्याओं में बराबर बराबर बांटें।

• कुत्ते को 43 दिनों तक शाम के समय मीठी रोटी खिलाएं।

विशेष : हवन, यज्ञ : श्री बगलामुखी मंत्र जाप हवन करायें।

वास्तुदोष शांति उपाय

यंत्र : संपूर्ण वास्तुदोष निवारण यंत्र स्थापित कर पूजन करें।

मंत्र : ऊँ वास्तुदेवताभ्यो नमः मंत्र का १०८ बार जाप करें। वास्तु दोष शान्ति होगी।

रत्न : नवरत्न अंगूठी धारण करें।

रुद्राक्ष : 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

चौकी : वास्तु दोष निवारक चौकी पूजाघर में स्थापित कर नित्य पूजा करें।

दर्शन : गौरी शंकर के नित्य दर्शन करें। पारद शिवलिंग का दर्शन पूजन करें।

विसर्जन : नए सूती वस्त्र में जटावाला नारियल बांधकर बहते जल में प्रवाहित करने से सभी वास्तु दोष दूर होते है।

टोटके : • घर का प्रवेश द्वार यथासम्भव पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। प्रवेश द्वार के समक्ष सीढ़ियां व रसोई नहीं होनी चाहिए।

• भवन में कांटेदार वृक्ष व पेड़ नहीं होने चाहिए न ही दूध वाले पौधे कनेर, आक, कैक्टस एवं बोंसाई आदि। इनके स्थान पर सुगन्धित एवं खूबसूरत फूलों के पौधे लगायें।

• घर में युद्ध के चित्र, बन्द घड़ी, टूटे हुए कांच तथा शयन कक्ष में पलंग के सामने दर्पण या ड्रेसिंग टेबल नहीं होनी चाहिए।

• मुख्य द्वार पर मांगलिक चिह्न जैसे स्वास्तिक, ऊँ आदि अंकित करने के साथ साथ गणपति, लक्ष्मी या कुबेर की प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए।

• घर के मुख्य द्वार पर पाकुआ मिरर लगाएं।

विशेष : हवन, यज्ञ : घर में अखंड रूप से 9 बार श्री रामचरितमानस का पाठ करायें। यह वास्तुदोष दूर करेगा। या फिर वास्तु शान्ति हवन करायें।

कालसर्प योग शांति उपाय

यंत्र : कालसर्प योग यंत्र एवं संपूर्ण कालसर्प योग यंत्र का नित्य दर्शन पूजन करें।

मंत्र : **ऊँ रां राहवे नमः** या **ऊँ नमः शिवाय** या **ऊँ कृं कृष्णाय नमः** मंत्र का जाप नित्य 108 बार सफेद चंदन की माला पर करें।

रत्न : शनिवार के दिन राहु रत्न गोमेद धारण करें।

रुद्राक्ष : आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : पंचमी तिथि का व्रत पालन करें एवं श्रावण मास की नागपंचमी के व्रत का पालन करें।

दान : ताजी मूली का दान करें एवं सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण के दिन सात अनाज से तुला दान करें।

दर्शन : भगवान शिव एवं भैरव जी के दर्शन करें।

विसर्जन : मुट्ठी भर कोयले के टुकड़े नदी या बहते हुए पानी में प्रवाहित करें या नारियल बहते पानी में बहायें।

स्तोत्र : नित्य राहु स्तोत्रम का पाठ करें।

टोटके :
- गेहूं या उड़द के आटे की सर्प मूर्ति बनाकर एक साल तक पूजन करें तथा बाद में इसे नदी में छोड़ दें।
- पारद शिवलिंग बनवाकर घर में प्राण प्रतिष्ठित करवा कर नित्य पूजन करें।
- सवा महीने पक्षियों को जौ के दाने खिलायें।
- श्राद्ध पक्ष में पितरों का श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करें।
- कुलदेवता की नित्य पूजा अर्चना करें।

विशेष : हवन, यज्ञ – कालसर्प योग शान्ति पाठ करायें अथवा महामृत्युंजय जप सवा लाख योग्य विद्वान से करवायें।

शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या उपाय

यंत्र : शनि यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : शनि मंत्र – **ऊँ शं शनैश्चराय नमः** मंत्र का जाप 108 बार नित्य करें।

रत्न : शनि रत्न नीलम शनिवार के दिन मध्यमा अंगुली में धारण करें।

रुद्राक्ष : सात मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : शनिवार व्रत का पालन करें।

दान : काले चने, कच्चा कोयला, काली हल्दी, काले तिल, काला कम्बल और सरसों के तेल का दान करें।

दर्शन : शनि देव, हनुमान और भैरव जी के दर्शन करें।

विसर्जन : नारियल अथवा बादाम शनिवार के दिन जल प्रवाहित करें।

स्तोत्र : शनि चालीसा, शिव चालीसा, बजरंगबाण व हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

टोटके : • शनि मंदिर में जाकर कम से कम परिक्रमा व दंडवत प्रणाम करें।

• प्रत्येक शुभ कार्य में पूर्व कार्य बाधा निवारण के लिए प्रार्थना करके हनुमान व शनि देव के नाम का नारियल फोड़ें।

• प्रत्येक शनिवार को रात्रि में सोते समय आँखों में काजल या सुरमा लगायें व शनिवार को काला कपड़ा अवश्य पहनें।

• प्रत्येक शनिवार को सोते समय शरीर व नाखूनों पर तेल मसलें।

• मांस, मछली, मदिरा तथा नशीली चीजों का सेवन बिल्कुल न करें।

• शनिवार के दिन हनुमान जी के दर्शन करें।

विशेष : हवन, यज्ञ : शनि शान्ति जाप किसी योग्य पंडित से करायें।

नजर दोष निवारण उपाय

यंत्र : नजर दोष निवारक यंत्र एवं नवदुर्गा यंत्र का पूजन करें।

मंत्र : **ॐ अंजनीसुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि, तन्नो मारुतिः प्रचोदयात्** मंत्र का जाप करें।

रत्न : हकीक रत्न धारण करें।

रुद्राक्ष : रुद्राक्ष कवच अथवा 10 मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : मंगलवार व्रत का पालन करें।

दान : शनिवार के दिन नजर दोष से पीड़ित व्यक्ति के ऊपर से काले तिल 7 बार उतारकर मंदिर में दान करें।

दर्शन : हनुमान जी के नित्य दर्शन करें।

विसर्जन/जलाना : पुराने कपड़े की सात चिंदियाँ लेकर सिर पर से 21 बार उतारकर आग में जलाने से बच्चे को लगी नजर समाप्त हो जाती है।

स्तोत्र : हनुमान चालीसा अथवा हनुमान स्तोत्र का पाठ करें।

टोटके : • जो व्यक्ति नजर दोष से पीड़ित है उसके लिए किसी भी शनिवार या मंगलवार को राई, लाल मिर्च, नमक एवं चौराहे की मिट्टी लेकर उसे पीड़ित व्यक्ति के सिर के ऊपर से सात बार घुमायें व इस दौरान मौन रहें। इस दौरान आपको कोई टोके नहीं। इस समस्त सामग्री को आग में ड़ाल दें।

• नजर लगे व्यक्ति के सिर के ऊपर से दूध तीन बार उतारकर कुत्ते को पिला दें। ऐसा करने से नजर उतर जाती है।।

• घर के बुजुर्ग व्यक्ति का जूता लेकर पीड़ित व्यक्ति के सिर से सात बार उतारकर जूते के तलवे पर थूक लगाकर जमीन पर जोर से पटकें। जूता घुमाते समय "**ॐ रां राहवे नमः**" का जाप करते रहें।

विशेष : हवन, यज्ञ – हनुमान मंत्र जाप हवन करायें।

सर्वबाधा मुक्ति उपाय

यंत्र : सर्वबाधा मुक्ति यंत्र एवं नवग्रह यंत्र का दर्शन पूजन करें।

मंत्र : सर्व बाधा विनिर्मुक्तो, धन धान्य सुतान्वितः मनुष्यों मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः मंत्र का 108 बार जाप करें।

रत्न : नवग्रह रत्न अंगूठी धारण करें. अथवा बाधामुक्ति त्रिशक्ति लॉकेट धारण करें.।

रुद्राक्ष : बारह मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

व्रत : विजयादशमी व्रत एवं गणेश चतुर्थी व्रत का पालन करें।

दान : काले उड़द, काले तिल, तेल, लोहे के बर्तन आदि, काली गाय, काले कपड़े का दान किसी जरूरतमंद को करें।

दर्शन : माता दुर्गा के दर्शन करें।

विसर्जन : शनिवार के दिन काले धागे में पीपल के 8 पत्तों को एक गांठ में एक साथ बांधें, अगले शनिवार को जब नई गांठ बांधें तो पहली वाली गांठ को उतार कर बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें।

स्तोत्र : स्वस्तिवाचनम्, नवग्रहस्तोत्रम् का पाठ करें।

टोटके : • मंगलवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में गुड़ व चने का प्रसाद चढ़ायें. और प्रसाद को वहीं मंदिर में बांट दें।

• अमावस्या के दिन सूर्योदय से पूर्व नित्यकर्म से निवृत्त होकर स्नान आदि करने के बाद 11 लौंग, 11 काली मिर्च, 1 नींबू अपने सिर से सात बार उल्टा उतारकर नींबू के दो टुकड़े कर लें. इसके बाद दक्षिण दिशा में गोधूलि समय में फेंक दें।

विशेष : हवन, यज्ञ : दुर्गा सप्तशती मंत्र हवन अथवा दुर्गा सप्तशती पाठ करायें।

संकटनाशन गणेश स्तोत्र



प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।
भक्तावासंस्मरेन्नित्यमायु:कामार्थसिद्धये।1।।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।। 2।।

लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्ण तथाष्टमम्।। 3।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।। 4।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम्।। 5।।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।। 6।।

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।। 7।।

अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।। 8।।

।। इति संकटनाशन गणेश स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

अथ स्वस्तिवाचनम्

हरिः स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वतिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।
द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम।
आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्म।।
पयः पृथिव्याम्पयऽ ओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः।
पयस्वतीःप्प्रदिशःसन्तुमह्य्यम्।।
अग्निर्देवताव्वातोदेवता सूर्य्योदेवता चन्द्रमादेवता व्वसवोदेवता
रुद्द्रादेवताऽऽदित्त्यादेवता मरुतोदेवताव्विश्श्वेदेवादेवता
बृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता।।
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः करु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः।।
अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

सुशान्तिर्भवतु। श्री मन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः।
मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः ।
कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः।
स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ओं सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि य पठेच्छृणुयादपि।।2।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।3।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।4।।

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरतस्मै गणाधिपतये नमः।।5।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।6।।

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।7।।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।8।।

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।9।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।10।।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।11।।

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।12।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।13।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।14।।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।15।।

।। गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।।

महालक्ष्म्यैष्टकम्



नमस्ते स्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 1 ।।

नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुरभयंकरि।
सर्व पापहरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 2 ।।

सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्वदुष्ट भयंकरि।
सर्व दुःख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 3 ।।

सिद्धिबुद्धि प्रदे देवि भुक्ति सुक्ति प्रदायिनि।
मन्त्र पूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 4 ।।

आद्यन्त रहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरी।
यो गजे योग सम्भूते महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 5 ।।

स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापाप हरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 6 ।।

पाद्मासन स्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमो स्तुते।। 7 ।।

श्वेताम्बर धरे देवि नानालंकार भूषिते।
जगात्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते।। 8 ।।

।। इति महालक्ष्म्यै स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

लक्ष्मी स्तोत्रम्



त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधा त्वं लोकपावनी।
सन्ध्या रात्रिः प्रभा भूतिर्मेधा श्रद्धा सरस्वती।। 1।।

यज्ञविद्या महाविद्या गुह्यविद्या च शोभने।
आत्मविद्या च देवि त्वं विमुक्तिफलदायिनी।। 2।।

आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीतिस्त्वमेव च।
सौम्यासौम्यैर्जगद्रूपैस्त्वयैत्तद्देवि पूरितम्।। 3।।

का त्वन्या त्वामृते देवि सर्वयज्ञमयं वपुः।
अध्यास्ते देवदेवस्य योगिचिन्त्यं गदाभृतः।। 4।।

त्वया देवि परित्यक्तं सकलं भुवनत्रयम्।
विनष्टप्रायं भवत्वयेदानीं समेधितम्।। 5।।

दाराः पुत्रास्तथागार सुहृद्धान्यधनादिकम्।
भवत्येतन्महाभागे नित्यं त्वद्वीक्षणान्नृणाम्।। 6।।

शरीरारोग्यमैश्वर्यमरिपक्षक्षयः सुखम्।
देवि त्वद्दृष्टिदृष्टानां पुरुषाणां न दुर्लभम्।। 7।।

त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता।
त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद्व्याप्तं चराचरम्।। 8।।

मा नः कोशं तथा गोष्ठं मा गृहं मा परिच्छदम्।
मा शरीरं कलत्रं च त्यजेथाः सर्वपावनि।। 9।।

मा पुत्रान्मा सुहृद्वर्गं मा पशून्मा विभूषणम्।
त्यजेथा मम देवस्य विष्णोर्वक्षः स्थलालये।। 10।।

सत्वेन सत्यशौचाभ्यां तथा शीलादिभिर्गुणैः।
त्यज्यन्ते ते नराः सद्यः सन्त्यक्ता ये त्वयामले।। 11।।

त्वया विलोकिताः सद्यः शीलाद्यैरखिलैर्गुणैः।
कुलैश्वर्यैश्च युज्यन्ते पुरुषा निर्गुणा अपि।। 12।।

स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो।। 13।।

सद्यो वैगुण्यमायान्ति शीलाद्याः सकला गुणाः।
पराङ्मुखी जगद्धात्री यस्य त्वं।। 14।।

न ते वर्णयितुं शक्ता गुणांजह्वापि वेधसः।
प्रसीद देवि पद्माक्षि मास्मांस्त्याक्षीः कदाचन।। 15।।

।। इति लक्ष्मी स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

कनकधारा स्तोत्रम्



अघैं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती भृघैंाघैंनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अघैंीकृताखिलविभूतिरपाघैंलीला मांगल्यदाऽस्तु मम मघैंलदेवतायाः।।1।।

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः।।2।।

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्षमानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः।।3।।

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दमानन्दकन्दमनिमेषमनघैंतन्त्रम्।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजघैंशयाघैंनायाः।।4।।

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः।।5।।

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेर्धाराधरे स्फुरति या तडिदघैंनेव।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिर्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः।।6।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्माघैंल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः।।7।।

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारामस्मिन्नकिंचनविहघैंशिशौ विषण्णे।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः।।8।।

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः।।9।।

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यैनमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै।।10।।

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।11।।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै।।12।।

सम्पत्काराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।।13।।

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
संतनोति वचनाघैंमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे।।14।।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।15।।

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्टस्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताघैंम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेषलोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम्।।16।।

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं करुणापूरतरघिंतैरपाघैंः।
अवलोकय मामकिंचनानां प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः।।17।।

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः।।18।।

।। इति श्रीकनकधारा लक्ष्मीस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

श्री आदित्य हृदय स्तोत्र



ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।।1।।

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागते रणम्।
उपागम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा।।2।।

राम राम महाबाहो ! श्रृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन्वत्स ! समरे विजयिष्यसे।।3।।

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।।4।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्।।5।।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।।6।।

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणांल्लोकान्पाति गभस्थिभिः।।7।।

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः।।8।।

।। इति आदित्य हृदय स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

अथ ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।1।।

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।2।।

अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।3।।

एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।4।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।5।।

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।6।।

अङ्गारक महाभाग भगवन् भक्तवत्सल!
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।7।।

ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चाऽन्ये ह्यपमृत्यवः।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।8।।

अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।9।।

विरिंचिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः।।10।।

पुत्रान्! देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।11।।

एभिर्द्वादशभिः श्लौकैर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा।।12।।

।।इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

सरस्वती स्तोत्रम्

सरस्वति नमस्यामि चेतना हृदि संस्थिताम् कण्ठस्थां
पद्मयोनिं त्वां ह्रीङ्कारां सुप्रियां सदा

मतिदां वरदां चैव सर्वकामफलप्रदाम्
केशवस्य प्रियां देवीं वीणाहस्तां वरप्रदाम्

मन्त्रप्रियां सदा हृद्यां कुमतिध्वंसकारिणीम्
स्वप्रकाशां निरालम्बामज्ञानतिमिरापहाम्

सोक्षप्रियां शुभां नित्यां सुभगां शोभनप्रियाम्
पद्मोपविष्टां कुण्डलिनीं शुक्लवस्त्रां मनोहराम्

आदित्यमण्डले लीनां प्रणमामि जनप्रियाम्
ज्ञानाकारां जगद्द्वीपां भक्तविघ्नविनाशिनीम्

इति सत्यं स्तुता देवी वागीशेन महात्मना
आत्मानं दर्शयामास शरदिन्दुसमप्रभाम्

श्रीसरस्वत्युवाच

वरं वृणीष्व भद्रं त्वं यत्ते मनसि वर्तते

बृहस्पतिरुवाच

प्रसन्ना यदि मे देवि परं ज्ञानं प्रयच्छ मे

श्रीसरस्वत्युवाच

दत्तं ते निर्मलं ज्ञानं कुमतिध्वंसकारकम् स्तोत्रेणानेन
मां भक्त्या ये स्तुवन्ति सदा नराः

लभन्ते परमं ज्ञानं मम तुल्यपराक्रमाः
कवित्वं मत्प्रसादेन प्राप्लुवन्ति मनोगतं

त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा यस्त्विमं पठते नरः
तस्य कण्ठे सदा वासं करिष्यामि न संशयः

।। इति श्रीरुद्रयामले श्रीबृहस्पतिविरचितं सरस्वतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

बगलामुखी स्तोत्रम्

चलत्–कनक–कुंडलोल्लसित–चारु– गण्ड– स्थलीम्,
लसत्–कनक–चंपक–द्युतिमदिंदु–बिंबाननाम्।
गदा–हत–विपक्षकां कलित–लोल–जिह्वांचलाम्,
स्मरामि बगलामुखीं विमुख–वाड़् मनस्–स्तम्भिनीम्।।

पीयूषोदधि–मध्य–चारु–विलसदू–रत्नोज्जवले मंडपे,
तत्–सिंहासन–मूल–पतित–रिपुं प्रतासनाध्यसिनीं्।
स्वर्णाभां कर–पीड़ितारि–रसनां भ्रांयद् गदां विभ्रतीम्,
यस्त्वां ध्यायति यांति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः।।

देवि! त्वच्चरणांबुजार्चन–कृते यः पीत–पुष्पाजलिम्,
भक्त्या वाम–करे निधाय च मनुं मंत्री मनोज्ञाक्षरम्।
पीठ–ध्यान–परोऽथ कुंभक–वशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवम्,
तस्यामित्र–मुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात्।।

वादी मूकति रंकति क्षिति–पतिर्वैश्वानरः शीतति,
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।
गर्वी खर्वति सर्व–विच्च जड़ति त्वंमंत्रिणा यंत्रितः, श्री नित्ये,
बंगलामुखी! प्रति–दिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

मंत्रास्तावदलं विपक्ष–दलने स्तोत्रं पवित्रं च ते।
यंत्र वादि–नियंत्रण त्रि–जगतां जैत्रं च चित्रं च ते।
मातः श्री बगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे,
त्वंनाम–स्मरणेन संसदि मुख–स्तंभो भवेद् वादिनाम्।।

दुष्ट–स्तंभनमुग्रंविघ्न–शमनं दारिद्रय–विद्रावणम्,
भूभृद्–सदमनं चलंमृग–दृशां चेतः समाकर्षणम्।
सौभाग्यैक–निकेतनं सम–दृशःकारूण्य–पूर्णेक्षणम्,
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।।

मातर्भजय मद्–विपक्ष–वदनं जिह्वां च संकीलय,
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य–देव–धिषणामुग्रां गति स्तंभय।

शत्रूंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण–गदया गौरांगि पीतांबरे,
विघ्नौघं बगले! हर प्रणमतां कारूण्य–पूर्णेक्षणे।।
मातभैरवि! भद्र–कलि विजये! वाराहि! विश्वाश्रये।
श्रीविद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे रमे।
मातंगि त्रिपुरे! परात्पर–तरे! स्वर्गपवर्ग–प्रदे!
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहिमाम्।।
संरम्भे चौर–संघे प्रहण–समये बंधने व्याधि–मध्ये,
विद्या वादे विवादे प्रकुपित–नृपतौ दिव्य–काले निशायाम्।
वश्ये वा स्तंभने वा रिपु–वध–समये निर्जने वा वने वा,
गच्छंस्तिष्ठंसित्र–कालं यदि पठति शिव प्राप्नुयादाशु धीरः।।
त्वं विद्या परमा त्रिलोक–जननी विघ्नौघ–संच्छेदिनी,
योषाकर्षण–कारिणी त्रि–जगतामानंद–संवर्द्धिनी।
दुष्टोच्चातन–कारिणी पशु मनः संमोह संदायिनी,
जिह्वां कीलम–भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्र–विद्या परा।।
विद्या–लक्ष्मीर्नित्य–सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व– साम्राज्य–सिद्धिः,
मानं भोगो वश्यमारोग्य सौख्यं, प्राप्त सर्व भू–तले त्वत्–परेण।
यत्–कृतं जप–सन्नाहं गदितं परमेश्वरि!
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते।
पीतांबरा च द्वि–भुजां त्रि–नेत्रां गात्र –कोमलाम्।
शिला–मुद्गर–हस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम्।।
ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
गुरु भक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित्।।
नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादरात्,
धृत्वां यंत्रामिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले।
राजानोऽप्यरयो मदांध करिणः सर्पा मृगेंद्रादिकाः,
ते वै यांति विमोहिता रिपु–गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा।।

।। इति बगलामुखी स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

संतानगोपाल-स्तोत्रम्



श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम।
सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम। ।
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम।
यशोदांकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्।।

अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा।।
गोपालं डिम्बकं वन्दे कमलापतिमच्युतम।
पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुंगवम। ।

पुत्रकामेष्टिफलदं कप्रजाक्षं कमलापतिम।
देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम।
पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते।

यशोदांकगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम।
श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन।

भक्तकामद गोविन्द भक्तं रक्षशुभप्रद।
देहि मे तनय कृष्णं रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहिमे तनयं सदा।
भक्तमन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः।।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

कप्रजाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते।।
राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे।।

अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते।।
श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।।

अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित्।।
वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो।।

डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन।।
नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।
कमलनाथ गोविन्द मुकुन्द मुनिवन्दित।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
सुतं देहि श्रियं देहि पुत्रं प्रदेहि मे।।
यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम्।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा।।

नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि मे प्रभो।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते।।
पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं मे देहि माधव।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते।।

गोपालडिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते।।
मनोवांछितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन।।

याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहिमे पुत्रसम्पदम्।
भक्तचिन्तामणे रामकल्पवृक्ष महाप्रभो।।
आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं सुतम्।
अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन।।

वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम्।
अस्माकं पुत्रसम्प्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतं।।
ओंकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम्।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम्।।

वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत।
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो।।
राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो।
समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा।।

अब्जपद्मनिभं पद्मवृन्दरूप जगत्पते।
देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव।।
नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।

दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहिमे तनयं श्रियम्।।
यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधूसुत।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक।।

अस्माकं वाप्रिछतं देहि देहि पुत्रं रमापते।
भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते।।
रमाॉदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।।

चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव।
अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते।।
कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमर्चित।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन।।

देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते।
समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा।।
भक्तमन्दार गम्भीर शंकराच्युत माधव।
देहि मे तनयं गोपबालवत्सल श्रीपते।।

श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन।
भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो।।
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो।।

श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
दासमन्दार गोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन।
मत्पुत्रफलसिद्धयर्थं भजामि त्वां जनार्दन।।

स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं विलोक्य मन्दस्मितमुज्जवलांगम्।
स्पृशन्तमन्यस्तनमंगुलीभिर्वन्दे यशोदांकगतं मुकुन्दम्।।
याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

अस्माकं पुत्रसम्पत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवंदित।।
वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम।
कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित।।

कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदाप्रियनन्दन।
मह्यं च पुत्रसंतानं दातव्यं भवता हरे।।
वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत।
देहि मे तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन।।

पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णो वामन माधव।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव।।
कप्रजाक्ष कृष्ण देवेन्द्रमण्डित मुनिवन्दित।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा।।

देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन।
सीतानायक कप्रजाक्ष मुचुकुन्दवरप्रद।।
विभीषणस्य या लंका प्रदत्ता भवतापुरा।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव।।

भवदीयपदाम्भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव।।
राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित।।

राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे।
भाग्यवत्पुत्रसंतानं दशरथात्मज श्रीपते।।
देवकीगर्भसंजात यशोदाप्रियनन्दन।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव।।

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शंकर।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।
गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते।।

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं।
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम्।।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो ।
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः।।

दीयतां वासुदेवेन तनयो मत्प्रियः सुतः।
कुमारो नन्दनः सीतानायकेन सदा मम।।
राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।
ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।
विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो।।

नमामि त्वां पद्मनेत्र सुतलाभाय कामदम।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम्।।
भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद।
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः।।

स्वामिंस्तवं भगवन् रामकृष्णमाधव कामद।
देहि मे तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः।।
तनयं देहि गोविन्द कप्रजाक्ष कमलापते।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।
शंखचक्रगदाखड्गशार्ंगपाणे रमापते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानुवन्दित।।
रामराघव गोविन्द देवकीवरनन्दन।
रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित।।

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।
मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

गोपिकार्जितपंकेजमरन्दासक्तमानस।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
रमॉदयपंकेजलोल माधव कामद।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः।।

वासुदेव रमानाथ दासानां मंगलप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

पुत्रप्रद मुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभ प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम्।
वन्दामहे सदा कृष्ण पुत्रलाभप्रदायिनम्।।

कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय मुरारये।
नमस्ते पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो।।
नमस्तस्मै रमेशाय रुकिमणीवल्लभाय ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिने रंगशायिने।।
रंगशायिन् रमानाथ मंगलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालनायक।।

दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते।।
यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जर्नादन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।
नीतिमान् धनवान् पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते।
भगवंस्त्वकृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित।।

यः पठेत् पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत।
श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्ररत्नं सुखाय च।।
जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धनं श्रियम्।
ऐश्वर्यं राजसम्मान सद्यो याति न संशयः।।

।। इति संतानगोपाल स्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

श्री राम स्तोत्र



श्रीराम चन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणम्।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारूणम्।

कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम्।
पटपीत मानहुं तडित रुचि शुचि नोमि जनक सुतावरम्।

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चन्द्र दशरथ नन्दनम्।

शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारू उदारू अंग विभूषणम्।
आजानु भुज सर चाप धर संग्राम जित खरदूषणम्।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खलदल गंजनम्।

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो वरू सहज सुन्दर सांवरो।
करूणा निधान सुजान शीलु सनेहु जानत रावरो।

एहि भांति गौरी असीस सुनि सीय सहित हिय हर्षित अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि मुदित मन मन्दिर चली।

सो जानि गौरी अनुकूल सियहिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

।। इति श्री राम स्तोत्र सम्पूर्णम्।।

राहुस्तोत्रम्



अस्य श्रीराहुस्तोत्रस्य वामदेव ऋषिः। गायत्री छन्दः।
राहुर्देवता। राहुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः।।1।।

रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः।।2।।

कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः।
विधुन्तुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः।।3।।

ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः।।4।।

यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशुंस्तथा।।5।।

ददाति राहुस्तस्मै यः पठते स्तोत्रमुत्तमम्।
सततं पठते यस्तु जीवेद् वर्षशतं नरः।।6।।

।।इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ नवग्रहस्तोत्रम्

ओं ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकराभवन्तु।।

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।1।।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।2।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।3।।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।4।।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।5।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।6।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।7।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।8।।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।9।।

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।10।।

नरनारीनृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।11।।

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराऽग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।12।।

।।इति व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

अथ सूर्यकवचम्



श्रृणुष्व मुनिशार्दूल! सूर्यस्य कवचं शुभम्।
शरीरारोग्यदं दिव्यं सर्वसौभाग्यदायकम्।।1।।

देदीप्यमानमुकुटं स्फुरन्मकरकुण्डलम्।
ध्यात्वा सहस्रकिरणं स्तोत्रमेतदुदीरयेत्।।2।।

शिरो मे भास्करः पातु ललाटं मेऽमितद्युतिः।
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः।।3।।

घ्राणं धर्मघृणिः पातु वदनं वेदवाहनः।
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुरवन्दितः।।4।।

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः।
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्गं सकलेश्वरः।।5।।

सूर्यरक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भूर्जपत्रके।
दधाति यः करेतस्य वशगाः सर्वसिद्धयः।।6।।

सुस्नातो यो जपेत् सम्यग् योऽधीते स्वस्थमानसः।
स रोगमुक्तो दीर्घायुः सुखं पुष्टिं च विन्दति।।

।। इति श्रीमद्याज्ञवल्क्यमुनिविरचितं सूर्यकवचस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

अथ चन्द्रकवचम्



समं चतुर्भुजं वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं शङ्करस्य च भूषणम्।।

एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः।।

चक्षुषी चन्द्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः।।

पातु कण्ठं च मे सोमः स्कन्धे जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः।।

हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शङ्करभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः।।

ऊरू तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जङ्घे पातु पादौ विधुः सदा।।

सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चन्द्रोऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।

यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्।।7।।

।। इति श्री चन्द्रकवचम् सम्पूर्णम्।।

अथ मंगलकवचम्



रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेषगमो गदाभृत्।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूलो सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।1।।

अङ्गारकः शिरो रक्षोन्मुखं वै धरणीसुतः।
श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः।।2।

नासां शक्तिधरः पातु मुखं मे रक्तलोचनः।
भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा।।3।।

वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं पातु रोहितः।
कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः।।4।।

जानुजङ्घे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा।
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः।।5।।

य इदं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम्।।6।।

सर्वरोगहरं चैव सर्वसम्पत्प्रदं शुभम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वसौभाग्य–वर्धनम्।
रोगबन्धविमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः।।7।।

।। इति श्रीमार्कण्डयपुराणे मङ्गलकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ बुधकवचम्



बुधस्तु पुस्तकधरः कुङ्कुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपनः।।1।।

कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा।
नेत्रे ज्ञानमयः पातु श्रोत्रे पातु निशाप्रियः।।2।।

घ्राणं गन्धप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजौ पुस्तकभूषणः।।3।।

वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः।।4।।

जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः।।5।।

एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
सर्वरोगप्रशमनं सर्वदुःख निवारणम्।।6।।

आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्।।7।।

।। इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे बुधकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ बृहस्पति कवचम्



अभीष्टफलदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम्।
अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम्।।1।।

बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः।
कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः।।2।।

जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवतागुरुः।।3।।

भुजावाङ्गिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः।।4।।

नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वन्द्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः।।5।।

जानुजङ्घे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे सर्वतो गुरुः।।6।।

इत्येतत् कवचं दिव्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।7।।

।। इति श्रीब्रह्मयामले बृहस्पतिकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ शुक्रकवचम्



मृणालकुन्देन्दुपयोजसुप्रभं पीताम्बरं प्रसृतमक्षमालिनम्
समस्तशास्त्रार्थविधिं महान्तं ध्यायेत् कविं वांछितमर्थसिद्धये।।1।।

शिरो मे भार्गवः पातु भालं पातु ग्रहाधिपः।
नेत्रे दैत्यगुरुः पातु श्रोत्रे मे चन्दनद्युतिः।।2।।

पातु मे नासिकां काव्यो वदनं दैत्यवन्दितः।
वचनं चोशनाः पातु कण्ठं श्रीकण्ठभक्तिमान्।।3।।

भुजौ तेजोनिधिः पातु कुक्षिं पातु मनोव्रजः।
नाभिं भृगुसुतः पातु मध्यं पातु महीप्रियः।।4।।

कटिं मे पातु विश्वात्मा ऊरू मे सुरपूजितः।
जानुं जाड्यहरः पातु जङ्घे ज्ञानवतां वरः।।5।।

गुल्फौ गुणनिधिः पातु पातु पादौ वराम्बरः।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु स्वर्णमालापरिष्कृतः।।6।।

य इदं कवचं दिव्यं पठति श्रद्धयान्वितः।
न तस्य जायते पीडा भार्गवस्य प्रसादतः।।7।।

।। इति ब्रह्माण्डपुराणे शुक्रकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ शनिकवचम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद्वरदः प्रशान्तः।।1।।

शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीड़ाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।2।।

कवचं देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्।।3।।

ओम् श्रीशनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः।।4।।

नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः।।5।।

स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।6।।

नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा।।7।।

पादौ मन्दगतिः पातु सर्वाङ्गम् पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन्मे सूर्यनन्दनः।।8।।

इत्येतत्कवचं दिव्यं पठेत्सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीडा प्रीतो भवति सूर्यजः।।9।।

व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि सुप्रीतस्तु सदा शनिः।।10।।

अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीडा जायते क्वचित्।।11।।

इत्येतत्कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टमजन्मस्थ दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान्दोषान्सर्वान्नाशयते प्रभुः।।12।।

।। इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शनैश्चरकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ राहुकवचम्



प्रणमामि सदा राहुं शूर्पाकारं किरीटिनम्।
सैंहिकेयं करालास्यं लोकानामभयप्रदम्।।1।।

नीलाम्बरः शिरः पातु ललाटे लोकवन्दितः।
चक्षुषी पातु मे राहुः श्रोत्रे त्वर्धं शरीरवान्।।2।।

नासिकां मे धूम्रवर्णः शूलपाणिर्मुखं मम।
जिह्वां मे सिंहिकासूनुः कण्ठं मे कठिनाङ्घ्रिकः।।3।।

भुजङ्गेशो भुजौ पातु नीलमाल्याम्बरः करौ।
पातु वक्षःस्थलं मन्त्री पातु कुक्षिं विधुन्तुदः।।4।।

कटिं मे विकटः पातु ऊरु मे सूरपूजितः।
स्वभानुर्जानुनी पातु जङ्घे मे पातु जाड्यहा।।5।।

गुल्फौ ग्रहपतिः पातु पादौ मे भीषणाकृतिः।
सर्वाण्यङ्गानि मे पातु नीलचन्दनभूषणः।।6।।

राहोरिदं कवचमृद्धिदवस्तुदं यो भक्त्या पठत्यनुदिनं नियतः शुचिः सन्।
प्राप्नोति कीर्तिमतुलां श्रियमृद्धिमायुरारोग्यमात्मविजयं च हि तत्प्रसादात्।।7।।

।। इति श्रीमहाभारतोक्तं राहुकवचं सम्पूर्णम्।।

अथ केतुकवचम्



केतुं करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम्।
प्रणमामि सदा केतुं ध्वजाकारं ग्रहेश्वरम्।।1।।

चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्रसमद्युतिः।
पातु नेत्रे पिङ्गलाक्षः श्रुती मे रक्तलोचनः।।2।।

घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः।
पातु कण्ठं च मे केतुः स्कन्धौ पातु ग्रहाधिपः।।3।।

हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठः कुक्षिं पातु महाग्रहः।
सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः।।4।।

ऊरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽतिकोपनः।
पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्गं नरपिङ्गलः।।5।।

य इदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम्।
सर्वशत्रुविनाशं च धारणाद्विजयी भवेत्।।6।।

।। इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे केतुकवचं सम्पूर्णम्।।

श्री शनि चालीसा



जयति जयति शनिदेव दयाला । करत सदा भक्तन प्रतिपाला ।।
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै । माथे रतन मुकुट छवि छाजे ।।
परम विशाल मनोहर भाला । टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ।।
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके । हिये माल मुक्तन मणि दमके ।।
कर में गदा त्रिशूल कुठारा । पल बिच करैं आरिहिं संहारा ।।
पिंगल, कृष्णों, छाया, नन्दन । यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ।।
सौरी, मन्द, शनि, दश नामो । भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ।।
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहीं । रंकहुं राव करैंक्षण माहीं ।।
पर्वतहू तृण होई निहारत । तृण हू को पर्वत करि डारत ।।
राज मिलत बन रामहिं दीन्हो । कैकेइहुं की मति हरि लीन्हों ।।
बनहूं में मृग कपट दिखाई । मातु जानकी गई चतुराई ।।
लखनहिं शक्ति विकल करि डारा । मचिगा दल में हाहाकारा ।।
रावण की गति–मति बौराई । रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ।।
दियो कीट करि कंचन लंका । बजि बजरंग बीर की डंका ।।
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा । चित्र मयूर निगलि गै हारा ।।
हार नौलाखा लाग्यो चोरी । हाथ पैर डरवायो तोरी ।।
भारी दशा निकृष्ट दिखायो । तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ।।
विनय राग दीपक महं कीन्हों । तब प्रसन्न प्रभु है सुख दीन्हों ।।

हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी । आपहुं भरे डोम घर पानी ।।
तैसे नल परदशा सिरानी । भूंजी–मीन कूद गई पानी ।।
श्री शंकरहि गहयो जब जाई । पार्वती को सती कराई ।।
तनिक विलोकत ही करि रीसा । नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा ।।
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी । बची द्रौपदी होति उघारी ।।
कौरव के भी गति मति मारयो । युद्घ महाभारत करि डारयो ।।
रवि कहं मुख महं धरि तत्काला । लेकर कूदि परयो पाताला ।।
शेष देव–लखि विनती लाई । रवि को मुख ते दियो छुड़ई ।।
वाहन प्रभु के सात सुजाना । जग दिग्ज गर्दभ मृग स्वाना ।।
जम्बुक सिंह आदि नखधारी । सोफल जज्योतिष कहत पुकारी ।।
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं । हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं ।।
गर्दभ हानि करै बहु काजा । गर्दभ सिद्घ कर राज समाजा ।।
जम्बुक बुद्घि नष्ट कर डारै । मृग दे कष्ट प्रण संहारै ।।
जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी । चोरी आदि होय डर भारी ।।
तैसहि चारि चरण यह नामा । स्वर्ण लौह चांजी अरु तामा ।।
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं । धन जन सम्पत्ति नष्ट करावै ।।
समता ताम्र रजत शुभकारी । स्वर्ण सर्व सुख मंगल कारी ।।
जो यह शनि चरित्र नित गावै । कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ।।
अदभुत नाथ दिखावैं लीला । करैं शत्रु के नशि बलि ढीला ।।
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई । विधिवत शनि ग्रह शांति कराई ।।
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत । दीप दान दै बहु सुख पावत ।।
कहत रामसुन्दर प्रभु दासा । शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ।।

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार।

श्री शिव चालीसा



दोहा

श्री गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान।।

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु की ह्वै दुलारी। बाम अंग सोहत छवि न्यारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दि गणेश सोहै तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा। तब ही दुख प्रभु आप निवारा।।
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।
तुरत षडानन आप पठायउ। लवनिमेष महँ मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।।
दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं।

वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रगट उदधि मंथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये विहाला।।
कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई।।
पूजन रामचंद्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा।।
सहस कमल में हो रहे धारी। कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।।
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहं सोई।।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर।।
जय जय जय अनंत अविनाशी। करत कृपा सब के घटवासी।।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै।।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारो।।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो।।
मातु पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई।।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी।।
धन निर्धन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं।
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन।।
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। नारद शारद शीश नवावैं।।
नमो नमो जय नमो शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय।।
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पर होत है शम्भु सहाई।।
निया जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी।।
पुत्र हीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।।
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे।।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा। तन नहीं ताके रहे कलेशा।।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें। शंकर सम्मुख पाठ सुनावे।।
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्तवास शिवपुर में पावे।।
कहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुःख हरहु हमारी।।

।। दोहा ।।

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करौं चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश।।

हनुमान चालीसा



श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार।।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा।।

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूंज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे।।

लाय संजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
युग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को भावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरिभक्त कहाई।।

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

जय जय जय हनुमान गोंसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

बजरंग बाण



निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान।।

जय हनुमंत संत हितकारी। सुन लीजै प्रभु अरज हमारी।।
जन के काज बिलंब न कीजै। आतुर दौरि महा सुख दीजै।।
जैसे कूदि सिंधु महिपारा। सुरसा बदन पैठि बिस्तारा।।
आगे जाय लंकिनी रोका। मारेहु लात गई सुरलोका।।
जाय बिभीषन को सुख दीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा।।
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा। अति आतुर जमकातर तोरा।।
अक्षय कुमार मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा।।
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुरपूर महँ भई।।
अब विलंब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अंतरयामी।।
जय जय लखन प्रान के दाता। आतुर होईदुख करहु निपाता।।
जै हनुमान जयति बल–सागर। सुर–समूह–समरथ भट–नागर।।
ऊँ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले।।
ऊँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा। ऊँ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा।।

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकरसुवन बीर हनुमंता।।
बदन कराल काल–कुल–घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक।।
भूत, प्रेत, पिसाच निसाचर। अगिन बेताल काल मारी मर।।
इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की। राखु नाथ मरजाद नाम की।।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै। राम दूत धरु मारु धाइ कै।।
जय जय जय हनुमंत अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा।।
पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत कछु दास तुम्हारा।।
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं। तुम्हरें बल हौं डरपत नाहीं।।
जनकसुता हरि दास कहावौ। ताकी सपथ बिलंब न लावौ।।
जै जै जै धुनि होत अकासा। सुमिरत होय दुसह दुख नासा।।
चरन पकरि, कर जोरि मनावौं। यहि औसर अब केहि गोहरावौं।।
उठु, उठु, चलु, तोहि राम दुहाई। पायँ परौं, कर जोरि मनाई।।
ऊँ चं चं चं चं चपल चलंता। ऊँ हनु हनु हनु हनु हनुमंता।।
ऊँ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ऊँ सं सं सहमि पराने खल–दल।।
अपने जन को तुरत उबारौ। सुमिरत होय आनंद हमारौ।।
यह बजरंग–बाण जेहि मारै। ताहि कहौ फिरि कवन उबारै।।
पाठ करै बजरंग–बाण की। हनुमत रक्षा करै प्रान की।।
यह बजरंग बाण जो जापैं। तासों भूत–प्रेत सब कापैं।।
धूप देय जो जपै हमेसा। ताके तन नहिं रहै कलेसा।।

उर प्रतीति दृढ़, सरन ह्वै, पाठ करै धरि ध्यान।
बाधा सब हर, करैं सब काम सफल हनुमान।।

रविवार व्रत विधि

(सूर्य ग्रह शान्ति, तेज, आत्मविश्वास एवं राजकीय सम्मान हेतु)

व्रत का माहात्म्य : कुण्डली में सूर्य जब छठे भाव के स्वामी हों या सूर्य नीच की स्थिति में हो या फिर सूर्य पीड़ित हो तो सूर्य उपाय करना लाभकारी रहता है। सूर्य ग्रह की शांति के लिए रविवार के दिन का व्रत करना चाहिए। गुड़, तांबे और सोने का दान भी सूर्य ग्रह की शांति के लिए उत्तम माना गया है। रविवार के व्रत को करने से मनुष्य का मान–सम्मान बढ़ता है, बुद्धि में तेजस्विता आती है, मानसिक क्लेश दूर होकर मन शांत होता है व सुख की अनुभूति होती है।

व्रत का आरम्भ कब करें?

रविवार का व्रत आश्विन मास के शुक्ल पक्ष के अंतिम रविवार से आरंभ करना शुभ माना जाता है। यह व्रत आरम्भ करने के बाद लगातार एक वर्ष अथवा १२ या ३० रविवार को किया जाता है।

व्रत विधि : रविवार के दिन प्रातः नित्य कर्मों से निवृत्त होने के पश्चात् ५–१० बिल्व पत्र पानी में डालकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें।

• तिथि, पक्ष आदि कहकर संकल्प लें कि सारे रोगों के निवारण के लिए, सूर्य शान्ति के लिए, आयु की वृद्धि तथा सब कामनाओं की पूर्ति के लिए सूर्य व्रत से श्रीसूर्यदेव का पूजन हम कर रहे हैं।

• गणपति के स्मरण के साथ–साथ कलश आदि का पूजन करें एक तांबे के पात्र में लाल चंदन से अष्टदल कमल लिखकर सूर्य भगवान का पूजन करें।

• तांबे के कलश में जल लेकर उसमें रोली, अक्षत, लाल पुष्प डालकर श्रद्धा पूर्वक सूर्य नारायण को अर्घ्य प्रदान करें।

• सूर्य मंत्र **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः** का यथाशक्ति जाप करें।

• इस दिन भोजन सूर्यास्त से पूर्व ही कर लें।

• व्रत का समापन माघ मास की सप्तमी को करने का विधान है।

सोमवार व्रत विधि

(स्त्रियों का व्रत : अखण्ड सौभाग्य, संतान प्राप्ति एवं धन-धान्य)

व्रत का माहात्म्य : सोमवार का व्रत चंद्र ग्रह को प्रसन्न करने हेतु किया जाता है जिससे व्यक्ति को फेफड़े के रोग, दमा एवं मानसिक रोग से मुक्ति मिलती है। व्यक्ति की चंचलता दूर होती है। सोमवार का व्रत शिव को प्रिय है इसलिये अविवाहित लड़कियों को १६ सोमवार का व्रत करने से उत्तम वर की प्राप्ति होती है। सोमवार का व्रत करने से चंद्र के प्रभाव में आने वाले सभी व्यवसाय एवं वस्तुओं से लाभ प्राप्त होता है।

व्रत का आरम्भ कब करें?

सोमवार का व्रत चैत्र, वैशाख, श्रावण, कार्तिक या मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारंभ कर सकते हैं। आरम्भ करने के बाद १० या ५४ सोमवार तक किया जाता है। चन्द्र देव के लिए प्रति सोमवार का व्रत रखना चाहिए। सुयोग्य जीवन साथी के लिए १६ सोमवार का व्रत रखना चाहिए। त्रयोदशी तिथि को उत्तम वैवाहिक जीवन के लिए किया जाने वाला प्रदोष व्रत कहलाता है।

व्रत की विधि : सोमवार व्रत में व्यक्ति को प्रातः स्नान कर शिव जी को जल चढ़ाना चाहिए।

- शिव –गौरी की पूजा करनी चाहिए।
- सोमवार को शिव पूजन के बाद व्रत कथा सुननी चाहिए।
- केवल एक समय ही भोजन करना चाहिए।
- सोमवार का व्रत दिन के तीसरे पहर तक होता है, यानि शाम तक रखा जाता है।
- सोमवार व्रत तीन प्रकार का होता है प्रति सोमवार व्रत, सौम्य प्रदोष व्रत और सोलह सोमवार का व्रत। सभी व्रतों की विधि समान होती है।

मंगलवार व्रत विधि

(साहस, शत्रुओं के दमन एवं अनिष्ट निवारण हेतु)

व्रत का माहात्म्य : ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मंगलवार का व्रत उन व्यक्तियों को करना चाहिए, जिन व्यक्तियों की कुण्डली में मंगल पाप प्रभाव में हों या वह निर्बल होने के कारण अपने शुभ फल देने में असमर्थ हों। यह व्रत मंगल ग्रह की शान्ति के लिये किया जाता है। मंगलवार का व्रत सम्मान, बल, पुरुषार्थ और साहस में बढ़ोत्तरी के लिये किया जाता है। मंगलवार का व्रत करने से भूत–प्रेत बाधा दूर होती है तथा व्यक्ति के सभी संकट दूर हो जाते हैं।

व्रत का आरम्भ कब करें?

मंगलवार का व्रत ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से आरम्भ करना चाहिए। मंगलवार का व्रत 21 सप्ताह तक किया जाता है।

व्रत की विधि : इस व्रत को करने से पहले व्यक्ति को एक दिन पहले ही इसके लिये मानसिक रूप से स्वयं को तैयार कर लेना चाहिए।

• प्रातः काल नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान आदि क्रियाएं कर लें। तत्पश्चात् पूरे घर में शुद्ध जल छिड़कें।

• व्रत वाले दिन व्यक्ति को लाल रंग के वस्त्र धारण करने चाहिए।

• घर के ईशान कोण की दिशा में किसी एकांत स्थान पर हनुमानजी की मूर्ति या चित्र स्थापित करना चाहिए।

• पूजन स्थल पर चार बत्तियों का दीपक जलाया जाता है और व्रत का संकल्प लिया जाता है। इसके बाद लाल गंध, पुष्प, अक्षत आदि से विधिवत हनुमानजी की पूजा करें।

• मंगलवार व्रत में गेहूं और गुड़ का ही भोजन करना चाहिये। भोजन दिन–रात में एक बार ही ग्रहण करना चाहिए।

• इक्कीस व्रत की संकल्प संख्या पूरी होने के बाद व्रत का समापन करें।

बुधवार व्रत विधि

(विद्या, बुद्धि, आरोग्यता, सुख-समृद्धि एवं शान्ति के लिए)

व्रत का माहात्म्य : बुधवार व्रत करने से व्यक्ति की बुद्धि में वृद्धि होती है, इसके साथ ही व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए इस व्रत को विशेष रूप से किया जाता है। जिन व्यक्तियों की कुण्डली में बुध अपने फल देने में असमर्थ हों, उन व्यक्तियों को यह व्रत विशेष रूप से करना चाहिए।

व्रत का आरम्भ कब करें?

इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार से शुरु करना चाहिए। २१ से लेकर ४५ व्रत करने का विधि–विधान है। व्रत का समापन करने के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर दान अवश्य देना चाहिए। उपवासक को एक ही समय भोजन करना चाहिए। व्रत को मध्य में कभी नहीं छोड़ना चाहिए। अंत में प्रसाद भी अवश्य ग्रहण करना चाहिए।

व्रत की विधि : नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, स्नानादि कर संपूर्ण घर गंगाजल से शुद्ध करना चाहिए।

• व्रत रखने वाले उपवासक को हरे रंग के वस्त्र धारण करके बीज मंत्र **"ऊं ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधायः नमः"** का १७ या ३ माला जाप करना चाहिए।

• घर के ईशान कोण में एकांत स्थान में भगवान बुध या शंकर की मूर्ति अथवा चित्र किसी कांस्य के बर्तन में स्थापित करें।

• मूर्ति या चित्र स्थापित करने के बाद धूप, बेल–पत्र, अक्षत और घी का दीपक जलाकर पूजन करें। इसके बाद बुध मंत्र **ऊं ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधायः नमः** का उच्चारण करते हुए बुधदेव की आराधना करनी चाहिए।

• सायंकाल में दोबारा पूजा करते हुए, व्रत कथा सुनें व आरती करें।

• सूर्यास्त बाद भगवान को धूप, दीप दिखाकर मूंग की दाल का हलवा प्रसाद स्वरूप बांटना चाहिए।

गुरुवार व्रत विधि

(विद्या, मान-सम्मान, धन-दौलत एवं वैभव प्राप्ति)

व्रत का माहात्म्य : कुंडली में गुरु नीच राशि में, अशुभ ग्रहों के प्रभाव में या फिर अशुभ भाव का स्वामी होकर अशुभ भाव में स्थित हो तो इस व्रत का विधि–विधान से पालन करना चाहिए। इस व्रत को करने से संतान या धन संबंधी विषयों में लाभ होता है। व्रत की शुभता से गुरु शुभ होकर घर–परिवार में शुभ कार्यों में अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

व्रत का आरम्भ कब करें?

अग्निपुराण के अनुसार यदि किसी शुक्लपक्ष में गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र का योग हो और उस दिन यह व्रत शुरू किया जाए तो अत्यंत फलदायी होता है। गुरुवार का व्रत किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से प्रारंभ करें और ३ या १ वर्ष अथवा १६ गुरुवार व्रत करने का विधान है।

व्रत की विधि : बृहस्पतिवार को सूर्योदय से पहले उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर, भगवान बृहस्पतिदेव का स्मरण करते हुए व्रत का आरंभ करना चाहिए।

• उपवासक को घर के किसी कक्ष में छोटा अथवा बड़ा पूजा स्थल बनाकर उसमें भगवान बृहस्पतिदेव की प्रतिमा की स्थापना करनी चाहिए।

• स्नान के बाद पीले रंग के वस्त्र धारण कर केले के पौधे के पास आसन लगाकर आराधना का विशेष महत्व बताया गया है।

• **ऊं ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः** इस बीज मंत्र का यथाशक्ति जाप करें।

• भोजन में चने की दाल, बेसन और दूसरे पीले रंग के खाद्य पदार्थों का ही सेवन करना चाहिए।

• अंतिम गुरुवार को हवन क्रिया के पश्चात् बालक–विद्यार्थियों को उपरोक्त पदार्थ सहित भोजन कराकर दक्षिणा स्वरूप पीले वस्त्र, चने की दाल, पीला चन्दन गट्टा आदि प्रदान करें।

शुक्रवार व्रत विधि

(शुक्र ग्रह शान्ति, धन-वैभव व सन्तान की दीर्घायु के लिए)

व्रत का माहात्म्य : शुक्रवार का व्रत तीन तरह से किया जाता है। इस दिन भगवान शुक्र के साथ–साथ संतोषी माता तथा वैभव लक्ष्मी का भी पूजन किया जाता है। तीनों व्रतों की विधियाँ अलग–अलग हैं। यह व्रत अविवाहित स्त्री–पुरुष हेतु मनोकामना सिद्धि तथा दाम्पत्य सुख प्रदायक है। यह व्रत स्त्री–पुरुष एवं कुमार–कुमारी सभी वर्ग हेतु शुभ फलप्रदायक है। इस व्रत को करने से व्यक्ति के सौंदर्य में वृद्धि होती हैं। भोग–विलास की वस्तुओं में वृद्धि होती है।

व्रत का आरम्भ कब करें?

शुक्रवार का व्रत किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम शुक्रवार से प्रारंभ करें। इस व्रत को 21 या 31 शुक्रवार तक करने का विधान है।

व्रत की विधि : शुक्रवार के दिन प्रातः स्नान आदि करके सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वर्ण की गाय के दर्शन करें।

- सर्वप्रथम १ या २ कन्या के दर्शन करें और श्रीफल प्रदान करे तथा **ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** बीज मंत्र का यथाशक्ति जाप करें।
- इस दिन भोजन में दूध, दही, चावल, खीर, घी, साबुदाना एवं सफेद मावा के पदार्थ आदि वस्तुओं का ही सेवन करें। अन्य किसी भी पदार्थ का सेवन न करें।
- इस दिन रात्रिशयन भी सफेद चादर पर ही करें।
- अंतिम शुक्रवार को हवन क्रिया के पश्चात 6 कन्याओं को उपरोक्त वस्तुओं का भोजन करायें तथा दक्षिणास्वरूप सफेद वस्त्र, रुमाल, श्रृंगारिक वस्तुएं एवं चांदी का यथाशक्ति दान करें।

शनिवार व्रत विधि

(शनि ग्रह शान्ति, बाधा निवारण एवं साढ़ेसाती कष्ट निवारण)

व्रत का माहात्म्य : शनि ग्रह की शांति तथा सुखों की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों को शनिवार का व्रत करना चाहिए। विधिपूर्वक शनिवार का व्रत करने से शनिजनित संपूर्ण दोष, रोग शोक नष्ट हो जाते हैं एवं धन का लाभ होता है। इस व्रत से सर्वप्रकार के कष्ट, अरिष्ट आदि व्याधियों का नाश होता है और अनेक प्रकार के सुख, साधन, धन व पुत्र–पौत्रादि की प्राप्ति होती है।

व्रत का आरम्भ कब करें?

यह व्रत किसी भी शनिवार को किया जा सकता है। श्रावण मास के श्रेष्ठ शनिवार से व्रत प्रारंभ किया जाए तो विशेष लाभप्रद रहता है। व्रत आरंभ करने के बाद लगातार 33 सप्ताह तक किया जाता है।

व्रत की विधि : सूर्योदय से पूर्व उठकर अपने नित्यकर्मों से निवृत्त होकर शुद्ध जल से स्नान करना चाहिए।

- कलश में जल भरकर, शनि प्रतिमा को पंचामृत में स्नान कराकर काले चावलों से बनाए हुए चौबीस दल के कमल पर स्थापित करें।
- काले रंग के पुष्प, अष्टांग, धूप, फूल, उत्तम प्रकार के नैवेद्य आदि से पूजन करें।
- शमी अथवा पीपल के वृक्ष के सूत के सात धागे लपेटकर सात परिक्रमा करें तथा वृक्ष का पूजन सूर्योदय से पूर्व करें।
- व्रत–कथा को भक्ति भाव से सुनें तथा कथा कहने वाले को दक्षिणा दें।
- तिल, जौ, उड़द, गुड़ लोहा, तेल, नीले वस्त्र का दान करें।
- आरती और प्रार्थना करके प्रसाद बांटें तथा एक समय भोजन करें।
- ब्रह्मचर्य का पालन करें एवं नशे से परहेज करें।



आरती
श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। जय गणेश ....

एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।। जय गणेश ....

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय गणेश ....

हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे, सन्त करे सेवा।। जय गणेश ....

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।। जय गणेश ....

श्री गणेश वन्दना

वर्णनामर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामपि।
मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्।।

आरती
श्री लक्ष्मी जी की



ऊँ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत, हर–विष्णु–धाता ।। ऊँ जय......

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग–माता।
सूर्य–चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ऊँ जय......

दुर्गारूप निरंजनि सुख–सम्पत्ति–दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि–सिद्धि–धन पाता।। ऊँ जय......

तुम पाताल–निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव–प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता।। ऊँ जय......

जिस घर में तुम रहतीं, तहँ सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ऊँ जय......

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान–पान का वैभव, सब तुम से आता।। ऊँ जय......

शुभ–गुण–मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि–जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहिं पाता।। ऊँ जय......

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ऊँ जय......

श्री लक्ष्मी–वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।



आरती
श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग–दोष जाके निकट न झांकै।।

अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संज़ीवन प्राण उबारे।।
पैठि पताल तोरि जम–कारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।

बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।

श्री हनुमत्–वन्दना

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

आरती
श्री शनिदेव जी की



जय जय श्री शनिदेव भक्तन हितकारी।
सूरज के पुत्र प्रभु छाया महतारी।।जय.।।

श्याम अंक वक्र दृष्ट चतुर्भुजा धारी।
नीलाम्बर धार नाथ गज की असवारी।।जय.।।

क्रीट मुकुट शीश रजित दिपत है लिलारी।
मुक्तन की माला गले शोभित बलिहारी।।जय.।।

मोदक मिष्ठान पान चढ़त हैं सुपारी।
लोहा तिल तेल उड़द महिषी अति प्यारी।।जय.।।

देव दनुज ऋषि मुनि सुमरिन नर नारी।
विश्वनाथ धरत ध्यान शरण हैं तुम्हारी ।।जय.।।

आरती
श्री काली माता जी की



अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गाएं भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।

तेरे भक्त जनों पर माता भीड़ पड़ी है भारी। मैया ...
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी।।
सौ सौ सिहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती। ओ मैया ...

माँ–बेटे का इस जग में है बड़ा ही निर्मल नाता। मैया ...
पूत–कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता।।
सब पे करुणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुःखड़े निवारती। ओ मैया ...

नहीं मांगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना। मैया ...
हम तो मांगे मां तेरे मन में एक छोटा सा कोना।।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया ...

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली। मैया ...
वरद–हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली।।
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती। ओ मैया ...

श्री देवी–वन्दना

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

आरती
श्री दुर्गा जी की



जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।। ऊँ जय.......

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको।। ऊँ जय.......

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे।
रक्त–पुष्प गंड माला, कण्ठन पर साजे।। ऊँ जय.......

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर–नर–मुनि–जन सेवत, तिनके दुःखहारी।। ऊँ जय.......

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति।। ऊँ जय.......

शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। ऊँ जय.......

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे।। ऊँ जय.......

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ऊँ जय.......

चौंसठ योगिनी मंगल गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। ऊँ जय.......

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्त्ता, सुख सम्पत्ति करता।। ऊँ जय.......

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्राधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।। ऊँ जय.......

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। ऊँ जय.......

श्री अम्बा जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावे।। ऊँ जय......



आरती
माँ भगवती जी की

आरति माँ दुर्गे की गावें। चरण कमल में शीश नवावें।

दिव्य प्रभा माँ जग की माया, यह सब जग तेरी द्युतिछाया,
कण–कण में माँ की छवि पावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

माँ के मस्तक मुकुट विराजे, माँग सिंदुर भाल शशि साजे,
रक्ताम्बर पट पर बलि जावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

कर त्रिशूल केहरि पर सोहें, दुष्ट डरें मुनिजन मन मोहें,
मात उमा के चरण गहावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

अष्टभुजा माँ खप्पर वाली, दुर्गा जया त्रिनेत्रा काली,
कितने माँ के नाम गिनावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

ब्रह्माणी रुद्राणी कमला, आगम निगम बखानी विमला,
सरस्वती माँ को सिर नावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

शुंभ–निशुंभ–महिष को मारा, चण्ड–मुण्ड धूम्राक्ष सँहारा,
कितने माँ के सुयश सुनावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

पट्टाम्बर परिधान निराले, गल मोतियन की माला डाले।
नूपुर धुनि सुन–सुन हर्षावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

भैरव योगिनी गुण–गण गावें, डमरू ताल मृदंग बजावें।
हम भी उस धुन में रम जावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

शाकम्भरी वैष्णवी माता, उत्पादक पालक गति दाता,
धूप दीप गन्धादि चढ़ावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

भव बाधा से त्राण करो माँ, मंगलमय 'कल्याण' करो माँ,
करें आरती ध्यान लगावें। आरति माँ दुर्गे की गावें।

आरती
श्री संतोषी माताजी की



जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता।। जय..........

सुन्दर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, मन श्रृंगार लीन्हों।। जय..........

गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मंद हँसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे।। जय..........

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चँवर ढुरें प्यारे।
धूप, दीप, मधु मेवा, भोग धरें न्यारे।। जय..........

गुड़ अरु चना परम प्रिय, तामें सन्तोष कियो।
सन्तोषी कहलाई, भक्तन वैभव दियो।। जय..........

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही।। जय..........

मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक चनन सिर नाई।। जय..........

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसै हमारे, इच्छित फल दीजै।। जय..........

दुःखी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये।
बहु धन–धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये।। जय..........

ध्यान धर्‍यो जिस जन ने, मनवांछित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनन्द आयो।। जय..........

शरण गहे की लज्जा, राखियो जगदम्बे।
संकट तूही निवारे, दयामयी अम्बे।। जय..........

सन्तोषी माँ की आरती, जो कोई नर गावे।
ऋद्धि–सिद्धि, सुख–सम्पत्ति, जी भर के पावे।। जय..........



आरती
श्री सरस्वती जी की

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्‌गुण वैभव शालिनि, त्रिभुवन विख्याता।।
चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी।। मैया जय ....

बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।। मैया जय....

देवि शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया।। मैया जय ....

विद्या ज्ञान प्रदायिनि ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो।। मैया जय ....

धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो।। मैया जय ....

माँ सरस्वती की आरती, जो कोई नर गावे। ?
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे।। मैया जय ....

आरती
श्री कृष्ण जी की



आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में बैजन्ती माला। बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला। नंद के आनन्द नन्दलाला।
नन्द के आनन्द मोहन बृजचंद परमानन्द राधिका रमण बिहारी की।।

गगन सम अंग कांति काली। राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक।
कस्तूरी तिलक चंद्र सी झलक। ललित छवि श्यामा प्यारी की।।
श्री गिरधर..........

कनकमय मोर मुकुट बिलसैं। देवता दर्शन को तरसैं।
गगन सौं सुमन बहुत बरसैं। बजे मुरचंग।
मधुर मिरदंग ग्वालनी संग। अतुल रति गोप कुमारी की।।
श्री गिरधर ....

जहाँ ते प्रकट भई गंगा। कलुष कलि हारिणी श्रीगंगा।
स्मरण से होत मोह भंगा। बसी शिव शीश जटा के बीच।
हरै अध कीच। चरण छवि श्री बनवारी की।।
श्री गिरधर ....

चमकती उज्ज्वल तट रेणू। बजा रहे वृन्दावन वेणू।
चहूँ दिशि गोपि ग्वाल धेनू। हँसत मृदु मंद चांदनी चंद।
कटत भव फन्द। टेर सुनो दीन भिखारी की।।
श्री गिरधर ....

आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की



आरती
श्रीसत्यनारायण जी की

ऊँ जय लक्ष्मी रमणा, श्री जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक हरणा।।

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे।।

प्रगट भए कलि कारण द्विज को दरश दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो।।

दुर्बल भील कबरो, इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपति हरी।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभु जी, फिर स्तुति कीन्हीं।।

भावभक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीन्हीं, तिनको काज सर्‌यो।।

ग्वाल–बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयाल हरी।।

चढ़त प्रसाद सवाया, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा।।

श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे।
ऋद्धि–सिद्धि सुख–सम्पत्ति मनोवाँछित पावे।।

आरती
श्री शिवजी की



ऊँ जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगनी धारा।। ऊँ हर हर हर महादेव

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।
हँसानन गरूड़ासन, वृषवाहन साजे।। ऊँ हर ....

दो भुज चार चतुर्भुज, दशमुख अति सोहै।
तीनहु रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे।। ऊँ हर ....

अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चन्दन मृग मद सोहे, भोले शशिधारी।। ऊँ हर ....

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे।
ब्रह्मादिक सनकादिक, भूतादिक संगे।। ऊँ हर ....

कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधारी।
सुखकारी, दुःखहारी जग पालनकारी।। ऊँ हर ....

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।। ऊँ हर ....

त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे।। ऊँ हर ...



आरती
श्री विष्णु जी की

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।।

जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ जय......

मातपिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी।। ॐ जय......

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय......

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ॐ जय......

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। ॐ जय......

दीन बन्धु दुःख हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ जय......

विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ जय......

तन–मन–धन सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।। ॐ जय......

जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय......

श्री विष्णु स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।